

अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन : २०६७

६, ७ गते पुस २०६७/२२, २३ दिसम्बर २०१०

काठमाण्डू, नेपाल

International Maithili Conference: 2067

6, 7 Paush, 2067 / 22,23 December, 2010

Kathmandu, Nepal

एक नजरिमे
At a Glance



अपन भाषा, अपन पहिचान
अपन संस्कृति, अपन स्वाभिमान

hgsk'/ nlntsnf k|ti7fg nufot cGo k|sfzg åf/f

/fde/f]; sfkl8Þed/Ús

k|sflzt lgDg k':ts ;e ;fem\ k|sfzg, /]ha]a'S :6fn, hgsk'/ nufot k':ts laqmL :yn ;ed]kfKt sPn hf ;s\5 Ú



hgsk'/ nlntsnf k|ti7fg
hgsk'/wfd



df+bluf{ejfgL ckg]s}+;kl/jf/
k|zGg /fvy' Ú

/fde/f]; sfkl8Þed/'
;b:o Pj+kdv, ;+slt ljefu
gk]fn k|1f k|ti7fg, gk]fn



अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन : २०६७

६,७ गते पुस २०६७/२२, २३ दिसम्बर २०१०

काठमाण्डू, नेपाल

International Maithili Conference : 2067

6,7 Paus 2067/22,23 December 2010

Kathmandu, Nepal

एक नजरिमे
At a Glance

संयोजक/सम्पादक

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर'

Co-ordinator/Editor

Ram Bharos Kapari 'Bhramar'

प्रकाशक

अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक हेतु



जनकपुर ललित कला प्रतिष्ठान, जनकपुर

द्वारा प्रकाशित

Publisher

For International Maithili Conference

Janakpur Lalit Kala Pratisthan, Janakpur

डिजाइन : राजुप्रसाद काफ्ले
मुद्रण : सगरमाथा अफसेट प्रेस, बिजुलीबजार, काठमाडौं, ०१-४७८१३५०

मोल : ३००/- रु.
संस्थागत: ५००/- रु.

अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन : २०६७क
अवसर पर अतिथि सभक हेतु

स्वागत गान

रचना :
रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'

संगीत :
रामा मंडल

गायक/गायिका :
रामा मंडल, हरिशंकर चौधरी,
तनुजा शंकर, वन्दना मैनाली

हम मैथिल छी मैथिली हमर
सम्मेलन आजुक हो अजर-अमर
पुष्प गुच्छ ओ स्नेह आंजुर भरि
लऽ ठाढ़ स्वागतमे छी पहर सगर !

मिथिलासं ज्योति चलल सम्हरि जे
काठमाण्डूमे आबि सजल-अटल अछि
प्रेम स्नेह सद्भावक गंगा
वागमतीक संग रसल बसल अछि !
सम्बन्धक ई सूत्र ने टुटत
सजग हिमालयक शिखर-प्रखर ! हम मैथिल.... ।

मां मैथिलीक चरण छुबैत जे
बहैत अबैत अछि चपल पवन
सासुरसं आयल मान्यजनक लेल
श्रद्धासुमन आ सत सत नमन !
हमर अस्मिता पहिचान हमर जे
रोकि सकत से मजाल ककर ! हम मैथिल.... ।

मल्लकालक राजा दरवारमे
मैथिल केर साम्राज्य चलै छल
भाषा, साहित्य, गीत-नाद आ
नाटक मंचपर नट-नटी नचै छल
सभक मनोरथ आङ समौने
स्वागतमे अछि ठाढ़ नगर ! हम मैथिल... ।

विषय–सूची



सम्मेलन आयोजनक दुख-सुख

■ रामभरोस कापडि 'भ्रमर'
संयोजक/सम्पादक

अन्ततः अन्तर्राराष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनः २०६७ सम्पन्न भऽ गेल। शुरुसँ अन्तधरि एकटा बतहपनी जे उबजि गेल रहय तकर पटाक्षेप तँ भेल अछि, मुदा एहि आयोजनक क्रममे जे किछु अनुभव भेल, तकर कथा स्वयं अपनामे रोचक, घोचक आ अदभूत अछि।

कएक सालसँ मनमे सैंतने एहि आयोजनक स्फूटन तीरुपतिमे भेल जत्त छठम् अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनमे भाग लेबा लेल हम सभ गेल छलहुँ। 'चलु, अगिलाबेरक आयोजन काठमाण्डू, नेपालमे हयत आ से हम करब।' आ एही उद्घोषक सँग हमर बतहपनी शुरु भऽ गेल। काठमाण्डूमे एक वर्ष मात्र भेल छल अएला-साझाक अध्यक्षक रुपमे। अगिला साल अपना सपनाक सम्मेलन करबाक घोषणा, ओहन ठाममे जत्ता हम नीक जकां बैसियो ने सकल छी। लोकके चिन्हबो ने कएने छी। मुदा आंट त आंट होइछै। जे कार्यक्रम करैत काल हम पूर्वोमे करैत रहलहुँ अछि। आ अइ बेरका आंटक दू गोट महत्वपूर्ण आधार छल - १. भारतीय क्षेत्रमे होइत सम्मेलनमे खर्चक विवरण जे देल जाइत छल, ताहि अनुरुप नेपालमे आर व्यवस्थित करबाक नियार अनुसार डा. बैद्यनाथ चौधरी बैजू जीसँ उचित सहभागिता सहयोगक आ २. दोसर छल बी.पी. कोइराला फाउण्डेशनमे देल अनुरोध पत्रपर सांस्कृतिक प्रभारीक आश्वासन।

काठमाण्डूमे तीनमास पूर्वेसँ तैयारीक हेतु बैसारी कएल। एकटा कार्य सम्पादन समिति गठन भेल, आयोजक समिति तँ छलैहे। बजेट बनल- १२ लाख टकासँ उपरक। आर्थिक सहयोग खोजबाक काज भेल। प्रचार-प्रसार। स्मारिका प्रकाशन। कार्यक्रम स्थल। रहनसहन, खान-पान, यातायात। कवि गोष्ठी, विचार गोष्ठी-उद्घाटन-विर्सजन। सभक तैयारी एकसँ एक। उद्घाटन-राष्ट्रपतिसँ, समापन- उपराष्ट्रपतिसँ। सभ किछु तय भेल। 'मिथिलारत्न' दू गोटेकें, 'मिथिलाश्री' - छः गोटेकें। सभक चयन सर्वसम्मतिसँ। सभकिछु ब्यौंतल जकाँ, मुदा जे नहि भऽ सकल ओ छल पाइक जोगाड़। कार्यक्रम माथपर आबि गेलाक बादो अर्थक बेहालसँ हम एकक्षण विचलित भेल रही, मुदा हमरा बूझल छल जँ यशक भागी बनबाक अवसर अओतैक सभ अपना अपनीके आगाँ आबि सकैत छलाह, अपयश त हमरे माथपर थोपल जाएत। जे से कोहुना सम्मेलन सम्पन्न भेल। आ आइ सम्पूर्ण सम्मेलनक गतिविधिकें चित्रक माध्यमसँ कार्यक्रमक गरिमा अनुकूल भव्यरुपैं प्रकाशित कऽ अहाँ सभक हाथमे अर्पण कऽ रहल छी।

अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक किछु दुखद पक्ष पर विचार करी त एना कऽ विकछाओल जा सकैछ -

क. आश्वासन भेटितो सम्बन्धित ठामसँ अर्थक सहयोग नहि आबि सकल आ से कार्यक्रम प्रारंभ होएबासँ तीन दिन पूर्वमे जानकारी देल गेल।

ख. भारतीय प्रतिनिधित्व पूर्व निर्धारित नहि रहल, आयोजन ओहिसँ नीक जँका प्रभावित भेल।

ग. जत्र-तत्र सहयोगक अपेक्षा छल आ स्वयं उपस्थित भऽ गछने धरि छलाह से सभ अन्तिम समयमे बातसँ धूरि गेलाह।

घ. एकटा खास घेराक लोक कार्यक्रमकें असफल करबाक पूर्ण प्रयासमे लागल रहलाह।

ङ. स्थानीय सहभागिता अपेक्षा अनुकूल नहि रहल।

च. मिथिला चित्रकला एवं पुस्तक प्रदर्शनीक आयोजन रहितो तकर उपयोग नहि कएल जा सकल।

सम्मेलनक किछु सुखद पक्ष सेहो छल जे एखनो मोनकें हरियर कऽ दैत अछि -

क. पाइक अभाव रहितो काज रुकल नहि, योजना अनुकूल बढ़ैत गेल।

ख. राष्ट्रपति आ उपराष्ट्रपति लोकनि आमंत्रणकें सहज स्वीकार कऽ सम्मेलनकें गौरवान्वित कएलनि।

ग. कार्य सम्पादन समितिक साथी लोकनि दिन-राति खटि कार्यक्रम सफल बनएबामे पूर्ण योगदान देलनि।

घ. समयपर स्मारिकाक प्रकाशन आ दूगोट नवपुस्तकक लोकार्पण सुखद क्षण छल।

ङ. उपराष्ट्रपति परमानन्द झा एवं समासद् विमलेन्द्र नीधिक अपनत्व भरल सहयोग, सदिच्छा एवं प्रोत्साहन कठिन समयमे हमरा आत्मबल भरैत रहल। सँग पुरबामे मित्रवर उपेन्द्र झा सेहो पाछा नहि रहलाह।

एहने सन दुख-सुखक अनेकौं दृश्य-अदृश्य प्रसँगक सम्मिश्रणसँ एहि अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनः २०६७क आयोजन सम्पन्न भेल अछि। ई सम्मेलन हमरा निराश नहि कैलक, बरु फेरसं जनकपुरधाममे आयोजन करबाक उत्प्रेरणा देलक अछि, जे देखी माँ जानकीक महिमा कहिया होइत छन्हि।

अर्थक घोर संकटक विच फेरसँ एकटा ई दुस्साहस कएल जे सम्मेलनक सभ गतिविधिकें एकटा प्रतिवेदन रंगीन चित्रसभक सँग स्तरीय रुपमे छापि वितरण कएल जाए। ई एहु दुआरे जे एहन महत्वपूर्ण आयोजनकें दालिभातक कौर बुझि, माइजनी करबाक उपक्रम करैत लोककें चुनौती भेटौन जे कार्यक्रमकें कहियो हल्लुक नहि, विधि पुरएबाक माध्यम नहि बुझी अपितु समर्पित भऽ आयोजन करी आ ओकरा सगरो संसारमे स्थापित करबाक भरसक प्रयास करी।

विजयादशमी, २०६८



Happy and Sad Experiences in Organising the Conference

Ultimately, the International Maithili Conference 2067 (AD 2010) came to an end. A craze that lingered from the beginning to the end has dwindled, but in course of organising, stories of experiences are interesting, wonderful and painful at the same time.

The seed of organising the ceremony that had been lying underground for years sprouted at Tirupati, Andhra Pradesh, India where we had gathered together to participate in the Sixth International Maithili Conference. "Let us go to Kathmandu, Nepal where I'll take initiative to organise the next conference," I proposed. Following the declaration, my craze kept soaring. My arrival in Kathmandu as the Chairperson of Sajha Publication was nearing a year. I had to fulfil my declared dream of organising the Conference. Although I had organised such conferences before, it was challenging for two reasons: [1] seeking co-operation from Dr Baidya Nath Choudhary "Baijju" for a properly down-sized number of participants in comparison to the huge number which caused disorder and heavy expense in organising the said conferences earlier, and [2] seeking confirmation of the assurance of the Cultural Attaché of the B.P. Koirala Foundation for the request letter sent to the authority mentioned above.

A preparatory meeting was held in Kathmandu three months before. An executive committee was formed. The central organisational committee had already been formed. A budget above Rs. 1.2 million was proposed. Resources for money were explored. Publicity, publication of the souvenir, venue, residence, meals, travel, poetry recitation, forum, opening and closing ceremonies, each had to be managed. . The opening ceremony by the President of Nepal and the closing ceremony by the Vice-President were duly fixed. Two scholars were to be honoured as 'Mithilaratan' whereas six scholars were to be honored by 'mithilashree'. All these decisions were taken unanimously. All were going smoothly but money was the main problem. As the programme was drawing close, the economic problem distressed me. I knew full well that in case of glorification, every member will claim his/her role but in case of failure, I will be made accountable. But thankfully, the Conference was a success. All the activities were video recorded and published in the present Souvenir.

The negative aspects of the International Maithili Conference can be viewed as follows:

a) Despite assurance, the information about the inability for providing money by the concerned authorities/donors reached only three days ahead of the programme.
b) Indian representatives exceeded despite their promise. It badly hit the organisation.
c) Many people failed to provide economic cooperation at the eleventh hour.
d) A group of ill-motivated persons were involved in making the ceremony a failure.
e) Local participation was unexpectedly low.
f) Mithila Painting and Book Exhibition, though organised well, were neglected to a great extent by the audience.

There were some positive aspects of the Conference which still delight us:

a) Despite the shortage of money, the Conference ran pretty well and successfully.
b) President and Vice-President accepted the invitation and graced the occasion with their valuable presence.
c) The members of the Executive Body extended full co-operation by devoting maximum time in making all the programmes all success.
d) The timely publication of the Souvenir and the launching of two new books added to the happy moments.
e) Affectionate co-operation, goodwill and encouragement by Vice-President Parmanand Jha and CA member Bimalendra Nidhi emboldened me in hard times. Especially, my friend Upendra Jha helped me throughout the Conference.

A Mixed Scenario

The International Maithili Conference ended with various happy and unhappy experiences. It, however, motivated me to organise another conference in my own hometown Janakpur which is also an epicentre of the Mithila culture. I hope to accomplish my dream with the grace of Goddess Janaki (Sita).

Despite financial crisis, it is a daring endeavour to distribute a report covering all the activities of the conference along with coloured photographs marking different occasions. This will prove a challenge for those who take organising such programmes very lightly and with the sheer motive of showing leadership. One should not act just for making a formality of any programme, rather work hard and wholeheartedly to establish it as an example to others in particular and the world in general.

Finally, I thank Mr. Bijay Kumar Rauniyar, Reader (English), TU for editing the report and entire proceedings of the programme.

Bijayadashami, 2068

Ram Bharos Kapari 'Bhramar'
Co-ordinator/Editor



ऐतिहासिकतामे एकटा नव अध्याय जोड़ैत
अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, काठमाण्डू- २०६७

■ चन्द्रेश

नेपाल आ भारत दुनू भिन्न देश अछैतो एक-दोसरसँ अन्तर्सम्बन्ध कोनो नुकायल नहि अछि ताहिमे मिथिला-मैथिलीक सम्बन्ध ? कोनो देश वा विदेशक कोनो भू-भागमे अवस्थित मिथिला-मैथिली प्रेमी होअय त निश्चिते मिथिलावासीक लोकमे अपनत्वबोध स्वतः जागि उठैत अछि। ई स्वाभाविक थिक जे आँखिमे आँखि मिलिते भावनात्मक सम्बन्धमे स्नेहक प्रगाढत्व जागि की उठैत अछि जे मैथिलत्वबोधक पहचान करबैत अछि। मिथिलाक स्वतन्त्र पहचान थिक। नेपाल ओ भारतक बीचक धीचायल डाँडि अवस्से दू देशक बोध करबैत अछि, मुदा मिथिला-मैथिलीक नाम पर दुनू एक भऽ जाइत अछि। धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक अर्थात् आचार-विचार ओ रहन-सहनक दृष्टिएँ मिलैत जुलैत भाषा ओ रीति-रेवाज एक दोसरक ततेक सन्निकट आनि देने अछि जे केओ फुटका नहि सकैत अछि। राजा जनक ओ माय जानकीक भूमि ई मिथिला अदौसँ अपन सभ्यता सांस्कृतिक महत्ता बलेँ पूजित रहल अछि।

जैँ कि अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनमे देश-विदेशक लोक एक ठाम जमजूट भऽ अपन अस्तित्वबोधक पहचानकेँ अक्षुण्ण रखबाक हेतु संकल्पित होइत छथि। तैँ एहि खेप सेहो अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन २०६७ पुस ७,८ गते अर्थात् २२, २३ दिसम्बर २०१० केँ मनाओल गेल। एहि कार्यक्रमक संयोजक वा सर्वेसर्वा रहथि श्री राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' जे स्वयं अँखिगर छथि, मिथिला-मैथिली आन्दोलन प्रेमी छथि। बढ़ि चढ़िकऽ साहित्यकार छथि। पत्रकारिता जगतमे 'गामघर', आँजुर, अर्चना, आङ्गन आदि लऽ कऽ अमिट छाप छोड़नहि छथि। पुस ७ गते बुध दिन कार्यक्रम प्रारम्भ भेल। अपन भाषा ओ संस्कृतिकेँ देखैत मैथिलत्व परिधान अर्थात् धोती-कुरता ओ पाग-दोपटामे सुसज्जित नेपालक राजधानी काठमाण्डूक हनुमान ढोकासँ प्रातः १२ बजे प्रभातफेरी प्रारम्भ भेल। काठमाण्डू महानगरक मध्य भाग न्यूरोडक पश्चिम अर्थात् एके काठक बनल काष्ठमण्डप अछि आ सटले अर्थात काष्ठमण्डपक सोझाँ आ हनुमान ढोका दरबार चौकक पाछाँमे कुमारी मन्दिर अछि। हनुमान ढोका दरवार चौकसँ प्रभातफेरी कार्यक्रम प्रारम्भ भेल। कार्यक्रममे स्पष्ट छल बसन्तपुर चलै चलु' ७ गते भिनसर ११ बजे आ मैथिली जागरण रैलीमे भाग लिअ। स्पष्ट अंकित छल -

अपन भाषा, अपन पहचान/अपन संस्कृति, अपन स्वाभिमान !

अपनत्व बोध करबैत रामभरोस कापड़ि भ्रमरक स्वर गूँजि उठल - अपन मातृभाषाक सुरक्षा, प्रतिष्ठापनक अधिकार छैक। अपन सभ्यता-संस्कृति ओ अस्मिताक रक्षार्थ ई जागरण रैली थिक। बस की छल ? गूँजि उठल मिथिला-मैथिलीक जय-जयकार आ भ्रमरक नेतृत्वमे चलि पड़ल पयरे सहयात्रीगण प्रज्ञा-प्रतिष्ठान, कमलादी, काठमाण्डू। एहिमे भाग लेलथि देश-विदेशक प्रतिनिधि लोकनि। प्रायः डेढ़ किलोमीटर दूर, गूंजैत रहल गगनभेदी नारा आ आबि गेल ठाम पर।

प्रज्ञा प्रतिष्ठान, कमलादी, काठमाण्डू सभाकक्षमे नियत समय पर गूंजि उठल ध्वनि -'सर्वमंगल माङ्गल्यै ....'। मंच संचालक रहथि राजविराज नेपालक उद्घोषक साधना झा। मंचासीन रहथि महामहिम राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव, विजय कुमार गच्छदार, उपप्रधानमंत्री, मिनेन्द्र रिजाल, संस्कृति मन्त्री रामभरोस कापड़ि भ्रमर, संयोजक, डा. वैद्यनाथ चौधरी वैजू, कमलाकान्त झा, संजय सरावगी, श्री बैरागी काँइला, प्रज्ञा प्रतिष्ठानक कुलपति। डा. संजीता वर्मा ओ प्रज्ञाजी द्वारा अतिथि सभकेँ बैच प्रदान कयल गेल। तदुपरान्त स्वागत गीत जे रामभरोस कापड़ि भ्रमर लिखित छल -

'हम मैथिल छी, मैथिली हमर, सम्मेलन आजुक हो अजर-अमर'

प्रस्तुत कयलनि रामा मंडल, हरिशंकर, बन्दना मैनाली आदि। स्वागत मंतव्यमे श्री राम भरोस कापड़ि भ्रमरक स्वर गूंजि उठल- तीन वर्षक अथक प्रयासक वाद आइ अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक ई रुप भेटल अछि। एहि मैथिली सम्मेलनक अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुपक मान्यता देबाक चाही। एकर औचित्य कारगर धारगर होयत। नेपालक दोसर समृद्ध भाषा थिक मैथिली। भाषा संस्कृति ओ कला संस्कृतिक निर्माणमे एहि भाषाक अप्रतिम ओगदान अछि। काठमाण्डू घोषणापत्र एहि अवसर पर अओतैक। मैथिली भाषा-संस्कृतिक जे आधार छैक, अवस्था छैक ताहि पर छलफल होयत। जहिया नेपालमे संविधान बनतैक, मैथिली अपन स्थान सुरक्षित रखतैक। मैथिलीमे रोजगारीक सुअवसर आबि गेलैक अछि। मैथिलीक लोक तकलो पर नहि भेटि रहल छैक। भाषा सभकेँ सूचीकृत कयल जायत। राजकीय संरक्षणमेँ भाषाक अधिकार भेटैक। विद्यापति ट्रस्ट भऽ गेल छैक। एक करोड़ टाकाक ई ट्रस्ट थिक। अपन भाषामे पुरस्कार, पुस्तक प्रकाशन होयत। राष्ट्रप्रमुख एहि ठामक मैथिली भाषी छथि, ओ अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तित्व छथि। मैथिली भाषा, साहित्यक समृद्ध इतिहासकेँ जे मेघौन आकाशमे दबकल इजोत जकाँ कनछोपमे पड़ल अछि तकरा फरिछमे लाओल जाए। ओ आगत अतिथिकेँ स्वागत करैत मैथिली जिन्दावादक नारा लगवैत अपन वाणीकेँ विराम देल।

दीप प्रज्ज्वलित कऽ महामहिम राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव कार्यक्रमक उद्घाटन कयलनि। एहि अवसर पर ओ अन्तर्राष्ट्रीय

मैथिली सम्मेलन २०६७क अवसर पर प्रकाशित ‘स्मारिका’ आ श्री राम भरोस कापड़ि भ्रमर लिखित ‘भैया अएलै अपन सोराज’ नाटकक पुस्तक विमोचन कयलनि ।

डा. गंगा प्रसाद अकेला द्वारा घोषित ‘मिथिला रत्न’ सम्मान सर्व श्री डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव ओ तारानन्द मिश्र एवं ‘मिथिला श्री’ सम्मान सर्वश्री सत्यमोहन जोशी, डा. जगमान गुरुङ, डा. सूर्यनाथ गोप, विश्वनाथ पाठक, डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौनकेँ राष्ट्रपतिक हाथेँ प्रदान कयल गेलनि । ओत्त अनुपस्थित डा. नोवलकिशोर राइकें बादमे ई सम्मान अर्पण कएल गेलनि । शुभकामना मन्तव्य दैत डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजू जी व्यक्त कयलनि जे हिमालयक चट्टान पिघलि सकैए, मुदा भारत आ नेपालक दोस्ती नहि पीघलि सकैए । गंगा, जमुना आ सरस्वतीक संगम सदृश भारत आ नेपालक दोसती अछि । ई सातम ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन थिक । नेपालमे एक करोड़ मिथिला-मैथिली भाषी छथि । ई जे आइ ऐतिहासिक सम्मेलन भेल अछि ताहि अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक सर्वेसर्वा छथि संयोजक रामभरोस कापड़ि भ्रमर ।

श्री वैरागी काइँला जनौलनि जे मैथिली अत्यन्त प्राचीनतम भाषा थिक । २४० वर्षसँ राजभाषाक रुपमे एकर प्रयोग होइत अछि । साहित्य-दर्शनक हिसाबेँ एहि भाषाक महत्ता निसन्देह अविस्मरणीय थिक । विद्यापति अक्षय कोष-संस्कृति मंत्रालय द्वारा प्रदत्त अछि । सभ्क्रिया संवादक माध्यम थिक मातृभाषा । कोनो भाषामे जतेक विविधता होयत ततेक शक्ति अजस्त्र रुपमे संचित होअत से मातृभाषा मैथिलीकेँ प्राप्त छैक । ई अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन ज्वलन्त सम्मेलन थिक । सम्मान, यश, प्रतिष्ठा आदिमे विस्तारक सँग उत्प्रेरणा देत ई सम्मेलन ।

डा. मीनेन्द्र रिजाल, संस्कृति मंत्रीक कथन छलनि जे अपन भाषा, संस्कृति आ पहचानक वैशिष्ट्यमे मिथिलाक संस्कृति आ वेश-भूषा अपन महत्ता रखैत अछि । ई मैथिली समुदायक प्रतीक सम्मान-भाव थिक । उन्नति, संरक्षण आ परम्परागत भावेँ मैथिलीक अपन पहचान अछि । ई स्वाभाविक गुण थिक जे सभ फूलकेँ अपन सुवास, रंग आदि होइत छैक जे स्वाभिमान थिक । सभ भाषाक संस्कृतिक विकासमे संस्कृति मंत्रालय प्रतिबद्ध अछि । एहिसँ देशक एकता-सूत्र मजगूत होयत । मैथिली भाषा संस्कृति अमर होअय ।

श्री विजयकुमार गच्छदार, उपप्रधानमंत्री व्यक्त कयलनि जे कोनो समुदायक अस्तित्व केँ नष्ट करबाक लेल ओहि समुदायक संस्कृतिकेँ नष्ट करब थिक । जँ कोनो समुदायकसंस्कृति नष्ट होइत अछि तँ राष्ट्रीयता समाप्त होइत अछि । मातृभाषा प्रत्येक व्यक्तिक स्वाभिमानकेँ ऊँच रखैत अछि । तँ एकर संवर्द्धन ओ विकास के जारी राखब जरुरी अछि । मैथिली भाषा ओ साहित्यक विकासमे एकसँ एक अग्रणी पुरुष सभ भेलाह अछि । यथा-महाकवि विद्यापति आ लोक देवताक रुपमे प्रतिष्ठित जयवर्द्धन सलहेस, दुलरा दयाल, लोरिक, दीनाभद्री आदिसँ भाषाक श्रीवृद्धि भेल अछि ।

उद्घाटन-भाषणक क्रममे राष्ट्रपति रामवरण यादव जनाओल जे मिथिला नरेश जनक ओ जानकीक भाषा मैथिली मात्र तराइवासीक भाषा नहि थिक प्रत्युत राष्ट्रक गौरव भाषा थिक तँ दोसर भाषा थिक । भारत आ नेपालक मध्य ई भाषा सेतुक काज करैत अछि आ सुमधुर सम्बन्ध बनबैत अछि । ई राष्ट्र नेपाल बहुभाषी ओ बहुजातिक थिक । तेँ सभ जाति ओ सभ वर्गक जँ विभिन्न भाषा अछि तँ मातृभाषा एवं संस्कृतिकेँ जोगयबाक आवश्यकता अछि । तखने समुन्नत देश बनत । मैथिली तँ एहि देशक दोसर स्थान पर बहुसंख्यक द्वारा बाजल जायबला भाषा थिक ।

सदस्य जीवछ मिश्र संस्कृत श्लोकक उद्धरण दैत स्पष्ट कयलनि जे जहिना सुस्थान पाबि यथा बालामे मणि ‘फिट’ भऽ नृत्यांगनाक हाथमे शोभैत अछि... तदनुकूले अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन अपन सार्थक उद्देश्यमे सफल होयत ।

कुञ्जविहारी मिश्रक गोसाउनिक गीत ‘जय-जय भैरवि...’ पर स्रोतागण झूमि उठल । श्री कमलाकान्त झाक मंच संचालकत्वक किछु पंक्ति यथा-हम छी कमलाकान्त, एतय तँ मुदा गीते पचमेर चलत, लिखबाक कला होइत छैक आदि अपन अन्तर्राष्ट्रीय मंच वैशिष्ट्यकेँ देखा की देलक जे श्रोताक मन मोहि लेलक ।

रामा मंडल ‘मेड इन मिथिला’ कैसेटसँ स्व स्वरमे गीत प्रस्तुत कयलनि-सगरो घुमियौ करियौ मुदा मिथिलामे जान हम छी मैथिली बाबू, मैथिल-मिथिला ...। सांस्कृतिक कलाकारमे की बोर्ड पर शिवचन्द्र दास, तबला पर बेनी माधव, गिटार पर कमल मंडल, ढोलक पर विकास आदि रहथि ।

रामभरोस कापड़ि भ्रमर लिखित ‘जट-जटिन’ नृत्य नाटिका रमानन्द युवा क्लब, जनकपुरधाम द्वारा प्रस्तुत भेल । एहिमे कलाकारगणमे रहथि सर्वश्री उज्जवल कुमार मिश्र (जट), स्मृति मिश्र (जटिन), अवधेश कामत (मल्लाह), अजय मण्डल, रीतेश साह, राकी साह, सानु सिंह, सुनील सिंह, पंकज झा, सोनू राउत, ज्योति झा, निसु साह, चन्दा लामा, पूनम मिश्र आ पार्श्व गायकमे रहथि राजन मिश्र। ध्वनि-संतोष झा, ढोल-विकास कर्ण, की बोर्ड-अनिल मिश्र, तैयारी गीत पर प्रस्तुति - रामा मण्डल आ स्मृति मिश्र संगीत-अनिल आ रोशन, प्रकाश आ निर्देशन-अनिल कुमार मिश्र ।

श्रीमती नलिनी चौधरीक नृत्य दर्शकक मोनकेँ मोहि की लेलक जे दर्शक पर अमिट प्रभाव छोडि देल । भैरवी पर कुच्चीपुड़ी नृत्य आ नन्द गोपाल नृत्य ओ प्रस्तुत कयलनि ।

निष्कर्ष

(१) अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन मात्र भारतवर्षमे भेल छल । एहि बेर सातम नेपालमे भेला सन्ताँ अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप पाबि नामक सार्थकता प्रदान मयल ।

(२) ई अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन एहि हेतुएँ ऐतिहासिक महत्वक वस्तु बनि गेल अछि जे कोनो देशक महामहिम राष्ट्रपतिक उद्घाटन भाषण पहिल बेर भेल अछि ।

(३) मंत्री सतरक सहभागिता पूर्वहुमे भेल अछि । तत्कालनि उपप्रधानमंत्री भारतवर्षक श्री लाल कृष्ण आडवाणीजीक सहभागिता भेल छनि । तहिना एहि सम्मेलनमे उपप्रधानमंत्रीक उपस्थितिबोध अपन महत्ता दर्शबिते अछि ।

(४) वैज्ञानिक दृष्टिएँ कार्यक्रमक संयोजन-सम्पादन भेल । खासकऽ

राष्ट्रपतिक शुभ आगमनसँ अन्त धरि ।

(५) कार्यक्रमक समय नियत छल । समयमे कनेक हेर-फेर भेल तँ ओकरा अवडेरल जा सकैत अछि । प्रभात फेरीक समय निर्धारित छल जाहिमे एक घंटा विलम्ब भेल ।

(६) संयोजकक सोच आ दृष्टिमे नवीनता परिलक्षित भेल । एक तँ समय सीमामे कार्यक्रमक स्थिर रुप देब आ दोसर निर्धारित समय-सीमासँ ओम्हर-एम्हर नहि विचलित होयब ।

(७) व्यवस्थापकीय प्रबन्ध सभ तरहेँ सुव्यवस्थित छल । जँ व्यवस्थापकीय लाभ सहभागी जन उल्लाहपूर्वक नहि उठा सकलाह तँ व्यतिक्रम भेल कहल जा सकैत अछि ।

(८) निर्धारित लक्ष्यसँ बेसी व्यक्तिक सहभागिता कार्यक्रममे व्यवधान अनलक । जखन कि तिरुपतिसँ ल꠰ क꠰ विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगाक मञ्चधरि संयोजकक स्पष्ट व्क्तव्य छल । जँ संयोजकीय स्वरकेँ अवडेरल गेल तँ कुफल प्रभाव व्यवस्थापकीय पर पड़ल आ सहभागी गणकेँ भोगय पड़ल ।

(९) वसन्तपुरसँ मिथिला-मैथिलीक ध्वनित जय घोषमे मैथिल परिधानक सँग उल्लसित वातावरणमे पयरे गुजरैत प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सभाकक्षमे सहभागीगणक प्रवेश भेल । एहिमे आत्म सम्मान बोध जाग्रत भेल, हीन मानसिक विकार हटल आ सभसँ बढ़िक꠰ आनभाषा-भाषीक मानसमे मैथिलीक जागरुकताक सनेस विलहायल ।

(१०) बैग, बैच आ परिचय पत्रक समुचित प्रबन्ध होइतो ओहि सुविधाक लाभ सभ सहभागीगण नहि उठा सकलथि । सभाकक्षमे प्रवेश निमित्त निर्धारित पहचान पत्र नहि भेटि सकल । तैयो संयोजकीय दायित्वबोध कम क꠰ नहि आँकल जायत जे प्रवेश पत्र आनन-फाननमे द꠰ सभकेँ प्रवेशक द्वारि खोलि देलक ।

(११) स्मारिका आ भ्रमरक नाटक पुस्तकक विमोचल भेल । ई साहित्यिक रुचिक सँग साहित्यक श्री भंडारकेँ भरैत अछि ।

(१२) मंच संचालिकाक प्रस्तुति कमजोर रहल ।

(१३) ई सम्मेलन सफल रहल आ कैक दृष्टिएँ ऐतिहासिक महत्वक वस्तु बनि गेल अछि जाहि पर विचार-विमर्श अपेक्षित अछि आ सोचब विचारब पर बल दैत अछि ।

(१४) विद्यापति ट्रस्टक लेल स्वरुप उभरब एहि सम्मेलनक उपलब्धि थिक ।

दोसर दिन, पुष ८ गते वृहस्पति क꠰ अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन २०६७, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक संस्कृति विभाग द्वारा प्रायोजित विद्यापतिक पुण्य स्मृतिमे समर्पित विचार-गोष्ठी प्रातः १०:२० बजे अग्रवाल सेवा केन्द्र कमल पोखरीमे प्रारंभ भेल । संचालक रहथि श्री सन्तोष कुमार मिश्र । पहिल कार्यपत्र प्रस्तुत कयलनि डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव, एहि कार्यक्रमक अध्यक्षता कयलनि श्री कमलाकान्त झा । आसन ग्रहण कयलनि सर्वश्री रामभरोस कापड़ि भ्रमर एहि विचार-गोष्ठीक संयोजक रहथि - श्री कालीकान्त झा आ विश्लेषक चन्देश ।

डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव पठित आलेखमे 'मैथिली क्रिया संगति आ मेलक सामाजिक आधार' विषयक विचार उपस्थापित कयलनि । एहिमे मैथिली समाजक अर्न्तसम्बन्ध, वक्ता-श्रोताक Reflaction, आधुनिक भाषा-विज्ञानमे वैज्ञानिक पद्धति अर्थात् विज्ञान-पद्धतिक भाषा अपनायब, तथ्यक संकलन, तथ्यक विश्लेषण । कहबाक ध्वनि जे तथ्यक संश्लेषण क꠰ विश्लेषण करब ओकर व्यवहार बनि जाइत छैक । ओ जनौलनि जे ई तँ आधार (Advance Level) भेल । मैथिली वाक्यमे क्रिया-देनाइ । देब क्रियाक तीन रुप-देनिहार, देबबला वस्तु किताब अर्थात् तीनू चीज भेटैत अछि । दोसर उदाहरणमे-हम पढलहुँ । हम हँसलहुँ । एहिमे एकेटा रुप अछि । तात्पर्य जे क्रियाक विविध रुपमे बाँटल गेल अछि । आरो उदाहरण प्रस्तुत करैत-ओ घर पर हमरा बिताब देल । एहिमे घर पर अनिवार्य नहि Optional थिक । दोसर, ई हुनक घर छनि । एतय क्रियाक लेल हुनक Argument नहिभेलनि । क्रियाक संगति हेतु - तोँ हुनका लेल काज कयलहुँ । एतय हुनका लेल Non-Argument थिक । वाक्यमे संज्ञा, सर्वनामक सँग क्रिया नहियो रहल तँ काज चलैत अछि । ओ मैथिलीक क्रियाक भेदक सँग जनौलनि जे मैथिलीक कार्य संगति-विशिष्ट आ जटिल अछि ।

टिप्पणीकर्ता धर्मेन्द्र विह्वल कार्यपत्र पर टिप्पणी करैत जनौलनि जे भाषा विज्ञान आ भाषाक बात करी तँ किछु आगाँ कहनाइ असौकर्य बुझाइत अछि । मैथिलीक सन्दर्भमे तथ्य संकलन क꠰ भाषा विज्ञानक सम्बन्ध जोडबाक अछि । व्यवहार अत्यन्त महत्वपूर्ण थिक । भाषाक कसौटी होयबाक थिक । बोलीक सम्बन्ध फरिछयबाक थिक । मानक स्थितिक निर्धारण होअय । आन भाषाक कोना की प्रभाव पड़ल अछि । विभक्तिक प्रयोग आ संगहि हिन्दी ओ नेपालीपनक प्रभाव स्पष्ट होयबाक थिक । मैथिलीक बोलीक आधार पर विश्लेषण होयबाक थिक । भाषा खेला सकब तखने खा सकब । भाषे खेलाक꠰ खेबाक काज करैए । एहन नहि होअय जे भाषा विज्ञानमे ओझरा जाय । दू-चारि-पाँच वर्ष अवस्से मैथिली भाषामे अराजकताक आवश्यकता छैक, तदुपरान्ते मानक मैथिली बनत ।

जिज्ञासा प्रकट करैत पठित आलेखक सम्बन्धमे प्रा. विजय दत्त बात रखलनि जे कार्यपत्र देनाइ आवश्यक थिक । कमसँ कम Photo copy तँ उपलब्ध करयबाक चाही । Argument क बातकेँ आरो फरिछयबाक थिक । Subiect भावकेँ Objectक माध्यमे प्रकट करबाक थिक ।

श्री भगवान मिश्र कहलनि जे कोनो रुपमे आलेखक प्रति भेटय । फोटो काँपी किएक ने रहय ।

प्रवीण स्पष्ट कयलनि जे क्रियापदक समस्या मैथिलीमे छैक । उत्तम पुरुष मध्यम पुरुष आ अन्य पुरुषकेँ फरियाक꠰ राखक थिक । यथा-हम पोथी पढैत छी । ओ पोथी पढैत छथि । ओ पोथी पढैए । ओ पोथी पढैत छथुन्ह । दोसर उदाहरणमे-राजा अयलाह । नोकर आयल । तात्पर्य जे कार्यपत्रमे मात्र खानापुरी नहि होअय । ई संक्षिप्त नहि, अति संक्षिप्त जिज्ञासा थिक ।

डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजू जनौलनि जे मौनी, पौतीसँ ल꠰ क꠰ डाला, विरहारा धरि । एतेक दूर धरि जे जयनगर ओ जनकपुरक भाषाक ध्वनिमे अन्तर अछि । यथा-ल꠰ गेलथु । लै गेलै, खै गेलै । भावार्थमे सार भाषाक कोश एकेटा अबैत छैक । श्री गोपाल झाक कथन रहनि जे मिथिला राज्यक नीति ? मिथिलाक्षरक सँग भाषा नीति की ? भाषाक एकरुपता आवश्यके । मानक मैथिली

एकेटा होयतैक ।

श्री रामचन्द्र झाक कथन जे मैथिलीमे एकरुपता कोना सम्भव थिक ? एके गाम मे अलग-अलग वा एके परिवारमे अलग-अलग क्रियाक प्रयोग होइत छैक । दैनिक समस्या थिक । शुद्ध मैथिली बजै छी कि नहि से प्रश्न उठैए । मानक स्वरुपक निर्धारण नहि होअय से ठीक नहि । तँ सभक भाषाकँ सक्रिया भाषाक रुपमे लेबाक थिक ।

प्रत्युत्तरक क्रममे डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव जनौलनि जे दू दिन पहिने अयबाक कारणेँ फोटो स्टेट नहि आनि सकलहुँ । कार्यपत्रक सारांशे मात्र प्रस्तुत कऽ सकलहुँ । एक घटाक समय निर्धारित छल पूर्वमे आलेख प्रस्तुत करबाक लेल से मात्र पन्द्रह मिनट कऽ देल गेल । भाषा विज्ञान वास्तवमे हबामे चलैवला चीज नहि थिक । क्षेत्रीय भाषिक अन्तर-सामाजिक ओ व्यक्तिगत अन्तर । एहि अन्तरक बीचमे मैथिली भाषाक मानकीकरणक पक्षमे नहि छी । कारण अछि । 1% (one perecent) बुद्धिजीवीवलाक भाषाक होइक आ 11% बला भाषा-भाषीक नहि होइक तँ मानकीकरणमे दोसर वर्गकेँ घाटा होयतैक । जार्ज अब्राहम ग्रियर्सनक कथनानुसार मैथिली भाषा पर आन भाषाक प्रभाव छैक तँ ई भाषा जटिल छैक । ई स्वाभाविक छैक जे एक भाषाक प्रभाव दोसर भाषा पर पड़िते छैक । शुद्ध-अशुद्ध भाषाकँ बान्हि देबैक से नहि बान्हल जाय । क्षेत्रीयताक प्रभाव पड़ब स्वाभाविके थिक । भाषागत स्वाभाविक विकास होइक । शिक्षा, परीक्षा, प्रशासन, मीडिया आदि सभमे भाषागत एकरुपता पर पहुँचबाक लेल प्रयास होमक चाही ।

श्री कमलाकान्त झाक स्पष्ट मत छलनि जे पाठ्यक्रमक पोथीमे एकरुपता आवश्यक छैक । मुदा, ई बात कथा, कविता, उपन्यास, सिनेमा आदिमे नहि होइक ।

डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजू मन्तव्य देलनि जे रंदा दऽ कऽ चिकुन-चुनमुन बनयवाक लेल भाषाक मानकीकरण लाथेँ जँ मैथिलीकेँ बान्हि कऽ राखब तँ मैथिली भाषा पौतीमे बन्द भऽ जेती । एकरा स्वतंत्रता चाही । ओ उदाहरण प्रस्तुत करैत महाकवि विद्यापतिक पक्तिकेँ रखलनि जे तोँहे जे कहै छह गौरा नाच ...। एहिमे तोँहे शब्द आयल अछि । की ई शब्द मैथिली नहि थिक ? श्री अशोक झा, कोलकाता जनाओल जे परीक्षाक माध्यमक भाषाक रुपमे मैथिली होइक से विचारक बात थिक । एहि भाषाकँ विशेष व्यापक बनाओल जाय ।

डा. रेवती रमण लाल- मातृभाषा मैथिलीक माध्यमे शिक्षाकेँ अनठादेल जाइत छैक मदर माने माय नहि, अम्मा कहल जाइत छैक । एहि सभ बातक ध्यान राखल जयबाक थिक । श्री देवेन्द्र मिश्र - भाषामे एकरुपता आनी । मैथिलीक माध्यमे पढाइक अभियान चलाओल जाय । नेपाल सरकारकेँ दुराग्रहपूर्ण नीति छोड़क चाही । तँ व्यवस्थापूर्ण नीतिमे मैथिलीकेँ समकक्ष स्थान चाही । पाठ्यक्रममे मैथिली नहि अछि । प्राथमिक स्तर पर अछि तँ बादमे ऐच्छिक विषयक रुपमे । लोक सेवा आयोग कानूनी व्यवस्था कऽ लिअऽ जे प्रत्येक छात्र/छात्रा मैथिली भाषाक माध्यमे परीक्षा दऽ सकैत अछि ।

श्रीमती पुष्पा ठाकुर - दूधक रंग नहि बदलल अछि । मैथिलीमे केओ बाजय तँ शुद्ध-अशुद्धक फेरमे पड़ि ओहि व्यक्तिक आ भाषाक मजाक नहि उडाउ । सचेत ढङे भाषाक प्रयोग होयवाक चाही ।

प्रत्युत्तरक क्रममे डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव विचार दैत व्यक्त कयलनि जे हमरा लोकनि देवनागरीमे मैथिली लिखैत छी । देवनागरीसँ मिथिलाक्षरमे लिखबाक लेल (टेक्नोलोजी - तकनीकी) विकसित अछि जे जानकी फन्ट मे करब तँ स्वतः मिथिलाक्षरमे परिवर्तित भऽ जैत । आधारभूत शिक्षा यथा वर्ग १ सँ ८ धरिक मातृभाषा मैथिलीक भाषामे शिक्षाक आधार भेटल अछि । आनो वर्ग सभमे भेटय से प्रयास करबाक थिक । मुदा, भेटलासँ बेसिए प्रयास कार्यान्वयन करयबाक अछि । लोक सेवामे परीक्षाक माध्यम मैथिलीक रुपमे कोनो अडचन नहि छैक, मुदा ऐच्छिक माध्यमक रुपमे अछि ।

संतोष कुमार मिश्र मत देलनि जे देवनागरीस सोझे मिथिलाक्षर प्रिती फन्टमे कऽ सकैत छी । दोसर सत्रमे मंचासीन भेलाह सर्वश्री अशोक झा, तारानन्द मिश्र, डा. प्रफुल्ल कुमार हिं मौन, रामभरोस कापड़ि भ्रमर, चन्द्रेश आ संयोजक कालीकान्त झा तृषित । श्री तारानन्द मिश्र, पुरातत्वविदक आलेख पाठक विषय छल - मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदा ओ संरक्षणक उपाय । एहि कार्यक्रमक अध्यक्षता कयलनि श्री अशोक झा कोलकाता ।

श्री तारानन्द मिश्र अपन आलेखक माध्यमे स्पष्ट कयलनि जे मैथिली माने आर्य जाति थिक । कहबाक लेल वा कहि सकैत छी जे हमर दृष्टिएँ तीन तरहेँ विचार होयबाक चाही - (१) ब्राह्मण ग्रन्थादि (२) बौद्ध स्रोत (३) जैन स्रोत । ओना मोटा-मोटी २ प्रकारक सोच अछि । एहिमे ब्राह्मण ग्रन्थादि पर मोटा मोटी विचार कयल जाइत अछि । जैन आ बौद्ध स्रोतक विशेष उल्लेख नहि भेल अछि । ओ विदेह माधवक प्रवेशसँ लऽ कऽ शतपथ ब्राह्मणक समय, पश्चिमसँ पूरबक अभियान, क्षेत्र विशेषक आ खासकऽ सरस्वतीक किन्हेरमे ३ वेदक रचना, तीरभुक्ति-तीरहुती आदिक चर्च करैत कर्णाटकालीन विशेषक मूर्ति जे ३०-४०टा भेटलैक अछि तकर चर्च कयलनि । धरानमे पालकालक मूर्तिक चन्द्रिकापुर आदिक चर्च कयलनि । ओ स्पष्ट कयलनि जे उचित संरक्षणक अभाव छैक जे होयबाक चाही । उत्खनन आ अन्वेषण पुरातात्विक माध्यमे होयबाक चाही । तँ सरकारक संरक्षण भेटनाइ आवश्यक छैक ।

टिप्पणीकर्ता डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन जनौलनि जे तारानन्द मिश्रक आलेखमे दू वर्षसँ एतबे बात सुनैत छी । ओ भेडियारी जगहक चर्चक सँग कतिपय जगहक चर्च कयलनि । ओ स्पष्ट रुपेँ कहलनि जे आवश्यकता अछि संयोजन करबाक प्रश्नकर्ताक रुपमे श्री भगवानमिश्र राज बनौलीक सांगोपांग चर्च करैत महोत्तरी जिलामे विद्यापति प्रवासक बनौली थिक से स्पष्ट कयलनि ।

श्री गोपाल झा जनाओल जे आलेखमे समग्र मिथिलाक बात आ दशा-दिशाक उल्लेख होयबाक चाही छल से नहि भेल अछि । डा. गंगा प्रसाद अकेला सुझाव दैत व्यक्त कयलनि जे कार्यपत्र लिखित रुपमे सभक हाथमे होयबाक चाही ।

संयोजकीय दायित्व निमाहैत श्री कालीकान्त झा व्यक्त

कयलनि जे स्वागत-सत्कारमे लिप्त भऽ ध्यान विशेष ओम्हरे चलि गेल अछि जे समग्रतामे होयबाक चाही छल।

विवेचन-विश्लेषण करैत श्री चन्द्रेश व्यक्त कयल जे भाषा विज्ञान सन गूढ आ गूरुतर विषयकेँ उठाकऽ डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव क्रियाक संगति आ मेलक आधार विषयक सार्थकताक सम्बन्धमे अपन वक्तव्य देलनि। डा. यादव विद्वत भाषाविद छथि। हिनक चिन्ता मैथिली भाषा ओ साहित्यक सम्बन्धमे सर्वविदित अछि ओ सारगर्भित भाषामे सूक्ष्म दृष्टिएं विषय-वस्तुक सूक्ष्म-भावके प्रकट कयलनि। जैं कि आलेख नियत समयसँ विशेष अवधिक छल, से ओ वक्तव्यमे पहिने गछलनि जे एक घंटाक अछि, मुदा ओ मात्र बीस मिनटमे समेटलनि। स्वाभाविक थिक जे ओ जाहि बातकेँ उठौलनि ताहि भूमिकाक सँग सिद्धान्त ओ व्यवहार मे तालमेल बैसबितो सभ बातकेँ उतारि पायब सम्भव नहि भऽ सकलनि। ई सम्भवो नहि थिक जे एहन गूढ विषयकेँ छुमन्तर जकाँ बुझा देब। तैयो ओ अपन सामर्थ्य-शक्ति बलेँ समयक सदुपयोग कयलनि। कनेक विषयान्तर भेल। ओना ओ कैकटा उद्धरण प्रस्तुत कऽ क्रियाक संगति ओ मेलक आधारकेँ सुपुष्ट कयलनि। ओ जे विषय उठौलनि तत्सम्बन्धी सिद्धान्त ओ व्यवहारक उद्धरणक सँग अपन बातकेँ समय लऽ फरिछाकऽ रखितथि तँ बेसी रोचक आ मुखर भऽ श्रोताक समक्ष अबितय। बहुपदीय क्रियापदक सँग आनो आन पक्षकेँ प्रकाशमे अनितथि तँ आरो नीक होइतय। एहि विषयकेँ ओ नीक जकाँ बेकछाकऽ आनि सकैत छलाह मुदा समयाभाव एहि गम्भीर सन विषयकेँ विवेचित होयबासँ वन्चित कयलक।

श्री तारानन्द मिश्रक आलेख अपन रुचिक अनुकूल छलनि। ओ लिखित रुपमे पूर्वहू एहन आलेख प्रस्तुत कयने छथि। बेर-बेर एके बातकेँ दोहरओलासँ अरुचि उत्पन्न होयब स्वाभाविक थिक। ओना ओ श्रम साध्यपूर्वक पुरातत्वविद् भऽ आलेख प्रस्तुत कयलनि। ओ सहज सम्प्रेष्य भाषामे अपन बातकेँ मनोयोग पूर्वक रखलनि। कैकटा नव स्थान परक पूर्तिक अन्वेषणक चर्च कयलनि मूर्तिक काल-विभाजनक क्रममे अवस्से डा. मौन आ समर्थित किछु व्यक्तिक आपत्ति रहनि जे गुप्त कालक वा पाषाण कालक नहि थिक। पाल कालक होअय वा जे कोनो अन्य कालक ई सभ अन्षेणक विषय थिक। एहि पर चर्च होयबाके चाही। मन्थन चिन्तन भेलासँ वास्तविक रुप उभरि आओत। ओना, आलेख नीक छल। विवेच्य दुनू आलेख दम-खम पूर्ण कहल जा सकैत अछि। गुण-दोषक सभ्यक् विवेचन ओयबाके चाही। गोष्ठीकेँ दुनू आलेख दमदार बनौलक। कार्यक्रमक संयोजक श्रीराम भरोस कापड़ि भ्रमर जनाओल जे तीनटा कार्यपत्रक नियार-भास छल आ तीन गोट विद्वानकेँ भार देल गेलनि। तेसर व्यक्ति जनिका लोक साहित्यपरक सलहेस दीना भद्री विशेष पर आलेख प्रस्तुत करबाक छलनि से अस्वस्थ होयबाक जानकारी E-mail सँ देलनि अछि। एहि कार्यक्रममे पठित आलेख द्वयक आलेख पूर्ण नहि अछि। जँ लिखित रुपमे दू-तीन दिन पहिनो भेटितय तँ सभक हाथमे रहितय। बुझू तँ एखनो आलेख लिखित नहि छनि। जोड-घटाओ कऽ देताह। ई त्रुटि स्वाभाविक थिक से बुझि भविष्यमे ध्यान देमहि पड़त। श्री अशोक झा, कोलकाता अपन अध्यक्षीय भाषणमे स्पष्ट कयलनि जे हमरा लोकनिके वर्तमान स्थितिमे जीवाक अछि। पोखरिक बात तँ करैत छी, मुद्दा मांछ नहि छैक। नव नव विषयक चर्च करी। पुरने राग नहि अलापी।

विचार गोष्ठीक समापन १:२० बजे अपरान्हमे भेल आ भोजनोपरान्त २ बजे अपरान्ह सँ अग्रवाल सेवा केन्द्र कमलपोखरीमे डा. धीरेन्द्रक स्मृतिमे कवि गोष्ठी प्रारम्भ भेल। एहि कार्यक्रमक अध्यक्षता कयलनि श्रीमतीपुष्पा ठाकुर। मंचासीन रहथि रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’, संयोजक डा. कालीकान्त झा आ चन्द्रेश। चारिदर्जन कवि कवयित्रीक सूचीमे मात्र दू दर्जन कवि कवयित्रीक कविता पाठ भेल किएक तँ उपराष्ट्रपतिक निर्धारित समय आबि गेल आ कवि गोष्ठी मध्य समापन समारोहक बैनर टंगा गेल। मंचासीन व्यक्ति विचारर्यानुकूले सभ कविक उपस्थिति बोध मानि कार्यक्रम बीचहिमे समाप्त कऽ देल गेल। उपस्थित कविमे प्रमुख रहथि श्रीमती मीना ठाकुर, प्रवीण, विल पडवा, रेवतीरमण लाल, करुणा झा, श्याम शेखर झा, प्रमोद झा, जनक, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, सुधांशु कलाकार, विजय दत्त, मणिकान्त झा, विजेता चौधरी, नागवंशी, रामनारायण देव, दिनेश झा, देबेन्द्र मिश्र, अशोक झा, चन्द्रदेव झा, साधना झा, अयोध्यानाथ चौधरी, अकेला, चन्द्रेश, भ्रमर, संतोषकुमार मिश्र आदि। अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा ठाकुर कवि कवयित्रीक पढित कविता सभ पर विचार करैत कविता पाठसँ कवि सम्मेलनके समाप्त कयलनि।

निष्कर्ष

१. निर्धारित समयसँ कनेक विलम्बसँ कवि सम्मेलन प्रारम्भ भेल।

२. उपराष्ट्रपति महोदयक नियत समय पर आगमनक फलस्वरुप समयमे कटौती कयल गेल।

३. पूर्व निर्धारित कवि सूचीक अभाव बुझि पडल। कारण, कविक संख्या विशेष छल, मंच पर कविक संख्यामे बढोत्तरी होइत गेल।

४. महिला कवियित्रीक संख्या प्रशंसनीय कहल जायत।

५. कवितामे बैबिध्यताक अभाव परिलक्षित भेल। विशेष कविता एक रंगाहे वा एके भाव भूमिक छल। कही तँ उत्थानपरक परिलक्षित भेल।

६. बेसी कविक कविता पाठ नहि भऽ सकल जाहिसँ श्रोता बञ्चित रहल।

७. किछु कविक कविता बासिपनामे छल। कारण, बेर बेर मंच सँ पठित भऽ पुनः दोहराओल गेल छल। एहन कवितामे टटकापनक स्वाद कतय ?

८. दृष्टिवान कविक कमी खटकल।

अन्तिम सत्र २३-१२-१० कऽ समापन समारोह ३.२० मे प्रारम्भ भेल, एहि कार्यक्रमक प्रमुख अतिथि रहथि नेपालक उपराष्ट्रपति श्री परमानन्द झा आ अध्यक्षता कयलनि श्री रामभरोस कापड़ि ‘भ्रमर’, आसन ग्रहण कयलनि श्री सर्व श्री कमलाकान्त झा, डा. बैद्यनाथ चौधरी, बैजु, श्री विमलेन्द्र निधि, सभासद, डा.

रामावतार यादव। मंच संचालक रहथि कालीकान्त झा।

स्वागत मन्तव्यक क्रममे श्री जीवछ मिश्र आगत अतिथिक प्रति उद्‌गार प्रकट करैत सभक स्वागत कयलनि आ व्यक्त कयलनि जे ई अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन माईल स्टोनक रुपमे भेल। भाषा-भाषीक विकास ओ संवर्द्धनक लेल ई सम्मेलन अविस्मरणीय थिक। देश-विदेशमे मिथिला भाषा-भाषीक सन्देश पहुचय।

एहि अवसर पर उपराष्ट्रपति द्वारा डा. राम दयाल राकेशक पोथी 'समय शिला पर' कविता संग्रहक विमोचन कयलनि। उद्‌गार प्रकट करैत श्री कमलाकान्त झा जनौलनि जे जानकी मैथिली छथि। एहि मैथिली भाषाक संरक्षणक-संवर्द्धनक बात भेल अछि। भावक बात प्रकट भेल अछि।

प्रतिवेदक चन्द्रेश दुनू दिन भेल कार्यक्रमक सम्बन्धमे सांगोपांग टिप्पणी करैत प्रस्तुति कयलनि जे सामाजिक ओ भावनात्मक सम्बन्धमे राजनीति कतहु कोनो वाधा नहि बनैत अछि। कारण भाषिक ओ सांस्कृतिक राष्ट्रबाद अवस्से मोन मिलानीमे एक दोसरक पूरक बनैत अछि जे अटूट विश्वास उत्पन्न कऽ सम्बन्धक प्रगाढताके आरो मजबूत करैत अछि। ई अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन निस्सन्देह एकटा एहन चलाओल गेल अभियान थिक जे मोनसँ मोनक मिलानीक सँग नव सोच आ नव दृष्टिमे चेतनाक संचारक माध्यम बनल। एहिमे ज्वलन्त सामाजिक समस्याके उठाकऽ मैथिली भाषाक उन्नति ओ संवर्द्धनक लेल जन जागृति भेल अछि। राष्ट्रपति महोदयक उद्‌घाटन भाषण ओ समापन कार्यक्रममे उपराष्ट्रपतिक उपस्थिति बोध एहि अभियानके आरो गति प्रदान करैत अछि। मानवीय सम्बन्धक गहनता ओ मानवीय मूल्यक प्रतिष्ठापन हेतु स्पष्ट चिन्तनधारामे जे भाषिक चिन्ता उभरिकऽ आयल अछि तँ मिथिलाक सांस्कृतिक सम्पदाके बचयवाक चिन्तन मनन जोर मारलक अछि सामाजिक अन्याय एवं शोषणक विरोध स्वरुप संघर्षमे फलित किछु कविक कविता जोर मारने अछि तँ मिथिलाक माटि-पानिक प्रेम सेहो उभरिकऽ आयल अछि। दैहिक, मानसिक आ भावनात्मक रुपे नारीक शोषण-उत्पीडनक व्यथा उभरिक जे नारीक कवितामे आयल अछि तं ओहि प्रतिरोधक स्वरमे बेदना, आक्रोश आ उद्वेग सेहो अपन रंग जमौलक अछि। विचार-विमर्शक क्रममे सहभागीगणक बुलन्द स्वर सेहो अपन सार्थकता प्रदान करैत अछि। कृषि, शिक्षा, वाणिज्य, संस्कृति परक विषय-वस्तुके उठाकऽ जीवन-संघर्षक लेखा-जोखा प्रस्तुत भेल अछि। भनहि सूक्ष्मतामे किएक नै उभरल कहल जाय तथापि आस्था ओ विश्वासक क्रममे एकटा विचार बनिकऽ आयल अवस्से एहि सम्मेलनक महत्ता थिक। लोक संस्कृतिपरक दू गोट नृत्य-नाटिका 'जटजटिन' ओ 'डोमकच'क प्रस्तुति जे भेल से अवस्से समाजमे नव जागरण आनत। सांस्कृतिक कार्यक्रम आ एहिमे प्रस्तुत नृत्य ओ गीत प्रभावित कयलक अछि। ई सम्मेलन ऐतिहासिक कहल जायत जे अविस्मरणीय बनल अछि। डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव अपन उद्‌गारमे स्पष्ट कयलनि जे मैथिली भाषा-साहित्य, संस्कृति ओ कलाक विषयमे बेस गहन छल-फल एहि सम्मेलनमे भेल अछि। भविष्यमे मैथिलीक विकासमे ई सम्मेलन विशेष फलदायक होयत। संचार-माध्यमे जमिकऽ प्रचार-प्रसार होयबाक चाही जे मिथिला भाषी लोकनि लाभान्वित होथि।

डा. रामावतार यादव अपन उद्‌गार व्यक्त कयलनि जे मैथिली भाषाक स्वरुप लेल चिन्तित होयब स्वाभाविक थिक। किएक तँ स्वरुप स्थिर करबाक प्रयत्न करय पडत। बेसी लोक भाषाके प्रजातांत्रीकरण करय चाहैत अछि। १८८५ धरि ग्रियर्सनटा ग्रामर लिखित देलनि। ओ सभ उपभाषाक चर्चा कयने छथि। आई जे स्वरुप उपलब्ध अछि तकर सभक चर्च अबैत अछि। की मैथिली भाषामे ५ गोट नीक शब्दकोश उपलब्ध अछि? शब्दकोशक चर्चमे सभसँ पहिने पं. दीनबन्धुझाक नाम लेबऽ पडत। 'बलु' शब्द खूब प्रचलित अछि मुदा, शब्दकोशमे नहि भेटत जे बहुसंख्यक बजैत अछि आ लिखाईत अछि। मैथिली पढ़ऽ पडत। मैथिली भाषामे पढब आसान बात नहि थिक। द्विअर्थ शब्द नहि होअय। ई अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन कनेक नीक जकाँ भेल अछि मुदा खूब नीक जकाँ नहि भेल अछि। श्री विमलेन्द्र निधि अपन उद्‌गारमे व्यक्त कयलनि जे हम जते एहि सम्मेलनक प्रति हृदयोदगार प्रकट करब से थोड़ होयत। सभके सक्रिय सर्मपणक सँग सहयोग देबाक चाही। नेपाल-भारतक ऐतिहासिक सम्बन्ध सभ अर्थे अछि। भाषा ओ संस्कृतिक लडाई राजनैतिक पक्षमे नहि होइत छैक। भाषाविद् ओ संस्कृतिक पक्षमे होइत अछि। भाषा आ संस्कृतिक संरक्षण ओ संवर्द्धन होबाक थिक। एहि बीच शाल ओढाकऽ उपराष्ट्रपतिके सम्मान कयल गेलनि। संगहि डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजू आ कमलाकान्त झा कँ उपराष्ट्रपतिद्वारा शाल ओढा कऽ सम्मान कयल गेलनि। विदित होअय जे पूर्वमे संयोजक समेत सभ मंचासीन व्यक्ति के फूलक माला, पागसँ सँम्मानित कयल गेलनि आ क्रमात् शाल ओढाकऽ। डा. वैद्यानाथ चौधरी बैजू समापन समारोहमे फेरो दोहरयलनि जे एहि सातम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक कर्ता-धर्ता श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' छथि। ओ स्पष्ट कयलनि जे आठम अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली गुवाहाटी (असम) मे हयत। ओ १२५ व्यक्तिक कार्यकारिणी समिति बनाओल जेबाक घोषणा कयलनि। ओ जनौलनि जे संरक्षक पद्म श्री डा.सी.पी. ठाकुर, डा.एस.पी. सिंह, कुलपति ल.ना.मि., विश्वविद्यालयत समेत पूर्वाञ्चलक तत्कालीन कुलपति डा. रामावतार यादव, डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव, पं. कामदेव झा (अध्यक्ष), रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', पं. कमलाकान्त झा, डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजू, (महासचिव), अशोक झा, श्वेताम्बर झा, रामचन्द्र झा, सांसद सरस्वती चौधरीप रचना, सभासद् विमलेन्द्र निधि, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, मणिकान्त, चन्द्रेश, अमरेशजी आदि समेत तत्क्षण २१ गोट नाम घोषित कयलनि। ओ जनौलनि जे एकटा क्षेत्र मात्र राजविराजसँ सभ नामक सूची भेटल अछि आ आनो क्षेत्रक सूची जोडिकऽ ई कार्यकारिणी सवा सयक भेल से आश्वस्ति हैत छी। मैथिलीक काज करयबला प्रतिनिधि होअए से ध्यान अछि।

उपर्युक्त प्रस्तावके श्री कमलाकान्त झा समर्थन दैत व्यक्त कयलनि जे चलब महामायाक कोरमे कामाख्या।

सभामे उपस्थित व्यक्तिक करतल ध्वनि सँ समर्थन भेटल । तदुपरान्त उपराष्ट्रपति श्री परमानन्द झा अपन उद्बोधन-भाषणमे उद्गार प्रकट करैत कहलनि जे मिथिलावासी छी तँ धोती आ पाग पहचान थिक । हम एतय उपराष्ट्रपतिक रुपमे नहि, परमानन्द झाक नामसँ उपस्थित छी । कोनो व्यक्तिक पहचान लेल भाषा, वेश, संस्कृतिक कतेक महत्व छैक से सभ केओ जनैत छी । एहि देशक साढे बारह प्रतिशत लोक मैथिली बजैत छी हुनक अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन भेल । ई सम्ममेलन की योगदान देलक तँ ई विद्वत् मण्डली अवस्से नेपालक मैथिली भाषाक सम्बन्धमे मार्ग-दर्शन देबाक प्रयास एहि देशक संविधान बनयबामे करत । मैथिली एहि राष्ट्रक राजभाषाक सहभागी प्राप्त कयने अछि । तखन प्रश्न उठैत अछि जे सरकारसँ उपेक्षित किएक रहल ? ई गम्भीर विषय थिक । एखन ध्यान नहि देबैक तं बादमे दऽकऽ की फल भेटत ? जखन संविधानमे भाषाक सम्बन्धमे लिखा जेतैक तखन ? ई उत्तम समय अछि । मैथिली भाषा-भाषी विशेष ध्यान देथि । कोनो भाषाक उत्थानक वास्ते ओकरा मीडियामे आयब बड़ जरुरी छैक । दैनिक पत्र निकलय । एहि वास्ते एहि समाजमे नेता सँ लऽक विद्वान लोकनि आगामी वर्ष वा भविष्यमे जं मैथिलीमे दैनिक पत्र-पत्रिका प्रकाशित होयत तं निश्चिते भविष्य स्वर्णिम थिक । हम मंचसं आग्रह करब से मैथिलीक स्थितिक प्रसँग थिक । उदाहरणस्वरुप-पहिने सरकारी नोकरीमे लोकक प्रवेश भेल तँ मास्टर डिग्रीक किछु अंक भेटैत छलैक । एहि ४६ वर्षमे मैथिली आ हिन्दी एहि लाभसँ बंचित रहल अछि । आब स्थान नहि अछि ते निर्णय लेब । दोसर बातजे पहिल जनगणनामे ने तँ मैथिली भाषा-भाषी छल ने भोजपुरी आ ने अवधी छल । आइ फूट स्थिति बनल अछि ।

ओ चिन्तित स्वरे अपन बात रखलनि जे हमरा कहल गेल जे भारत सँ १०० सँ बेसिए लोक आयल छथि तँ एहि ठाम जे उपस्थिति देखि रहल छी ताहिमे स्थानीय लोकक सहभागिता छुछुन्न बुझाइतअछि । हमसभ एहि सम्मेलनके ओतेक महत्व नहि दऽ सकलहू । हम कहैत छी जे जखन संघीय सरकार बनतैक तँ प्रादेशिक सरकार मैथिलीके महत्व देबे करतैक, मुदा केन्द्रीय सरकार ? नेपालक कोनो कार्यक्रममे एहि ढंक व्यक्तित्वक उपस्थिति भेल होइक से हमरा नहि लगैत अछि । एहि महत्वके अक्षुण्ण राखब उपस्थित समुदायक जवाबदेही थिक । हम कामना रखैत छी जे सभ सम्मानित व्यक्तिक जिनगी सुखमय आ स्वस्थमय बनओ जाहिसँ मैथिली भाषा ओ साहित्यक संवर्द्धन ओ विकासमे बृहत रुपमे योगदान भेटैक । मध्य जाडमे ई कार्यक्रम भेल अछि जे गति बनल रहय । मैथिली नेपालक दोसर भाषा अछि, एकरा राज्य सरकार स्वीकार कयने अछि । दोसर भाषाक ने महत्ता अछि से भेटक चाही, मुदा अखन धरि नहि भेटल अछि । आगामी दिनमे सोचि-विचारिकऽ कार्यक्रम बनाबय पड़त । एहि लेल सभ केओ जागरुक होई ।

अध्यक्षता करैत रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' जनाओल जे विभिन्न विपरीत परिस्थितिक बीच ई सम्मेलन भेल अछि । नेपालक राजनैतिक अव्यवस्था की छैक जे कखन की घटिल होयत ? एहन अव्यवस्थाक बीच क्षण-क्षण तरल व्यवस्था छैक । संकल्प सचमुच पैध होइत अछि । समस्त सहभागी लोकनिके हार्दिक अभिनन्दन । शौभाग्य एहि सम्मेलनमे भेलैक अछि जे महामहिम राष्ट्रपति उद्घाटन कयलनि आ उपराष्ट्रपति समापन । मैथिलीक भविष्य स्वर्णिम अछि । जँ आयोजन पक्ष पर ध्यान दी तँ पग-पग पर सभ तरहक सहयोग भेटल अछि । आर्थिक स्थिति होइक वा वातावरण बनयबामे सभक सहयोग भेटल जे कार्यक्रम सब तरहे व्यवस्थित रहल । सभसं बेसी कोनो एक आदमीक श्रेय छनि तँ उपराष्ट्रपति परमानन्द झाक, आ दोसर व्यक्तित्वमे तहिना छथि श्री विमलेन्द्रजी । हम आभारी छी ई. सत्यनारायण साह, जीवछ मिश्र, डा. गंगा प्रसाद 'अकेला', त्रिपाठीजी, देवनारायण यादव, बृषेश्चन्द्र लाल, काशीदेवी झाक जनिक सौजन्यसँ बैग आदिक सहभागिता भेटल । हमरा एहि सम्मेलनसँ सीख भेटलजे अपने कुवचन नहि कही भले, दूटा पाइ नहिदी से अपने लोकनिक स्नेह सद्भाव बनल रहओ । नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक सहयोग, स्नेह, सदभाव भेटल अछि । नेपालमे एक करोड टाका विद्यापति ट्रस्ट कोषमे राखल छैक । ओकर ब्याजसँ पोथी प्रकाशित होयत, सम्मान-पुरस्कार भेटत । अगिला कैबिनेटमे अवस्से ई प्रस्ताव पारित होयत । मैथिलीक नाम पर सम्पत्ति सुरक्षित रहतैक । ई एहि सम्मेलनक उपलब्धि थिक । नेपाल-भारतक सांस्कृतिक सम्बन्ध अक्षुण्ण रहत, हमरा सभक सिनेह बनल रहत आ स्नेह-सद्भाव बैजूजी आरो बनाकऽ प्रगाढ करताह । मैथिली नेपालक दोसर भाषा थिक, माइक भाषा थिक । मिनाप रमानन्द युवा क्लब, जनकपुरधाम आ आनो कलाकार साहित्यकार सभ छथि जे भरपूर सहयोग दऽ कार्यक्रमके सार्थकता प्रदान कयलनि अछि । ई अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन काठमाण्डू निरन्तर आ समय पर हैत भनहि तिथिमे हेर-फेर होअय ।

मिथिला नाट्यकला परिषद्, जनकपुरधामद्वारा 'डोमकछ' नृत्य नाटिका प्रस्तुत भेल । एहिमे भाग लेनिहार कलाकार छथि सर्वश्री सन्नी राउत (डोम), सपना श्रेष्ठ (डोमिन), मदन ठाकुर (चुडीवाला) । रामनारायण ठाकुर (वरियातीवाला) रीमा रिमाल (मलिकानि), परमेश झा (राना), गंगाकान्त झा, रविन्द्र झा, सोमु ठाकुर, वन्दना झा, सज्जीव सिंह, राखी झा, मुकेश मिश्र, मुकेश ठाकुर, विद्या मल्लिक । नाटय रुपान्तर ओ निर्देशन-रमेश रंजन झा, सह निर्देशन-परमेश झा, गायन-संगीता देव, नेहा प्रियदर्शी, सुनील मल्लिक, संगीत-सुनील मल्लिक, वादक-शम्भु कर्ण, ललन झा, मुकेश मिश्र, घनश्याम मिश्र ।

रंगारंग झमटगर सांस्कृतिक कार्यक्रम भेल । एहिमे रश्मि झा, रंजना झा, कुंज विहारी, बैजूजी, सुनील ठाकुर, नगीना कुमारी झा नृत्य, उषा पासवान, उपेन्द्र भगत नागवंशी आ मिथिलेश झाक सँग छोटू-नृत्य आदि भेल जे स्रोताके झुमा देलक ।

निष्कर्ष

१. कार्यक्रम सुविचारित, सुनियोजित, सुगठित आ तार्किक ढंगे भेल ।

२. वैज्ञानिक दृष्टिकोण किछु व्यक्तिक्रमके छोड़ि समयक ध्यान राखल गेल ।

३. महामहिम राष्ट्रपतिक उद्घाटन आ उपराष्ट्रपतिक समापन-समारोह अवस्से सम्मेलनक गौरव-बोध थिक ।

४. मैथिली परिधानमे पग यात्रा अवस्से जागरणक प्रतीक बनल । भाषा जागरण बोधक सन्देश विहलक ।

५. विचार गोष्ठीक विषय आ वक्तागणक चयन सार्थक ओ सारगर्भित छल । लोक साहित्यक पक्षके सेहो ध्यान राखल गेल छल जे नहि भऽ सकल ताहि पर बाते की ? एहि असुविधाक फरिछौट कयल गेल । तैयो, साहित्यिक दृष्टिकोणे भाषाक संवर्द्धन ओ विकासक जे चिन्ता प्रकट कयल गेल अछि से भविष्यक लेल आइयो चुनौती थिक आ ई बात उभरिकऽ आयल ।

६. साहित्यिक विषय-वस्तुके जखन आन्दोलनी नारामे बदलबाक प्रयास होइत अछि तं की गत होइत अछि से स्पष्ट रुपे देखार भेल । हमहू किछु छी अर्थात् सभमे अपन टांग अडयबाक बातसँ हल्लुकपना आयल । साहित्यिक मर्यादाक अनुभूति करौलक । ते भविष्यमे आरो सचेतनाक सँग सतर्कता बरतल जायत तकर भान करौलक ।

७. भावनात्मक सम्बन्ध राजनीति पर हाबी होइत अछि से परिलक्षित भेल । कटु-मधु सम्बन्धक अनुभूतिक उपरान्तो मधु बोरल सरसतामे कार्यक्रम सम्पन्न भेल ।

८. मूल्यहीन व्यवस्थाक प्रति आरो तिक्ख आक्रोशक स्वर प्रकट भेल ।

९. कवि-सम्मेलनमे कविक पुरनायेल आ बेर-बेर पठित कविताक दोहराओल जेबाक कारणे अखरल आ स्वादमे अरुचि उत्पन्न भेल से परिलक्षित भेल ।

१०. महिला कवयित्रीक सहभागिता प्रशंसनीय कहल जायत । किछु कवयित्रीक कवित्व शक्तिमेँ उष्ण ओ ताप छल से प्रभावित कयलक ।

११. पुरुषक कुत्सित मानसिकताके उधार करैत शब्दक ताकतिमे उक्तिक धारक फलस्वरुप बोल परोसल गेल जे जन जागरणक परिचायक बनि कविताक महत्ताके बढ़ौलक ।

१२. मीडियाक भरपूर सहयोग भेटल ।

१३. सम्मेलनमे सुदूर क्षेत्रक सहभागिता विशेष रहल आ स्थानीय स्तरक अभाव परिलक्षित भेल ।

१४. संयोजकक संग सक्रिय सदस्यगणक सांगठनिक क्षमता उभरिकऽ आयल जे कामक गतिके शनैः शनैः तीव्र करैत गेल ।

१५. कार्यक्रम कोनो कयल जाय आ कार्यक्रममे व्यक्तिक्रम कोनो हुल दऽ अपन औकाति देखबैत अछि से आयोजकीय ढंग सिखौलक । ई भविष्यक हेतु पाथेय बनत ।

१६. अनावश्यक विवरण सं बांचव-बचायबाक प्रयास भेल अछि ।

१७. मंच अनुशासित रहल । चलैत कार्यक्रमक बीच मंचक लोभ ओहि व्यक्तिके देखार कयलक जे अनावश्यक व्यवधान अनैत अछि । तैयो, कवि-सम्मेलनक मध्य भेल मंचक लोभ कनेक खटकल ।

१८. गुणवत्ताक दृष्टिए सम्मेलनक अपेक्षा ई सम्मेलन गति आ सुस्थिर रुप प्रदान कयलक ।

१९. अग्रिम कार्यक्रम २०११ मे २२ ओ २३ दिसम्बरके गुवाहाटीमे होयत से घोषणा भेल ।

२०. स्मारिका ओ पुस्तक विमोचन भेल से प्रशंसनीय ।

२१. कार्यक्रममे सहभागिता हेतु जे मापदण्ड बनाओल गेल छल ताहिमे शिथिलता भेल आ एकर दुष्प्रभाव कनेक-मनेक कार्यक्रम पर पड़ल । जेना एक निमन्त्रण एक व्यक्तिक रुपमे मान्य अछि, तकरा तोडल गेल ।

२२. आवास ओ भोजनादि व्यवस्था नीक छल ।

२३. कार्यक्रमक स्थिर आ सुव्यवस्थित रुप देबाक ई सम्मेलन झाखी (ट्रेलर) बनल जे अग्रिम कार्यक्रमक स्थिर रुप-रेखा हेतु सुनियोजित रंग-ढंग देलक ।

२४. लोक साहित्य परक नाट्यनृत्य ओ सांस्कृतिक कार्यक्रम जन पक्षधरताक क्रममे भेल । ई अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन २०६७ काठमाण्डू, नेपालक जे एतिहासिक सम्मेलन भेल ताहिमे सल्लाहकार समिति मा. विमलेनद्र निधि, मा. रामचन्द्र झा, डा. रामावतार यादव, डा. योगेन्द्र प्रसाद यादव, मा. राम नगीना सिंह, श्री वृषेशचन्द्र लाल, कार्य सम्पादन समितिक संयोजक श्री रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' सदस्यगण डा. रामदयाल राकेश, डा. संजीता वर्मा, ई. सत्यनारायण साह, श्री जीवछ मिश्र, सह प्रा. देवनारायण यादव, डा. गंगा प्रसाद 'अकेला', श्री धर्मेन्द्र झा 'विह्वल', श्री कालीकान्त झा 'तृषित', श्री सन्तोष कुमार मिश्र, डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजू, श्री कामदेव झा ओ श्री मणिकान्त दास छलाह । मिला-जुला कऽ ई कार्यक्रम मोनमे रचि-बसि गेल ।

मनमीत कुटीर, राजपूत कालोनी, मौलागंज दरभंगा

मो. ०९४३०६४०८८३



Adding a New Chapter of Historicity International Maithili Conference, Kathmandu 2067

Chandresh

Despite being two different nations, the interrelation between Nepal and India is a special one. And who doesn't know the inseparable relation between the Maithils of the two nations? Maithils residing in any part of the world possess a feeling of attachment and affection among them. When they meet one another anywhere, their eyes start telling unspoken stories of emotional attachment and identity of being Maithil. Mithila has an independent recognition. The border line between Nepal and India certainly divides the two nations but they become one in the name of Mithila--Maithili. Owing to religious, social, cultural, lingual and, above all, natural intermingling, they are one and inseparable Mithila, the land of king Janak and Mother Sita is revered throughout the world for her ancient civilization and cultural height.

International Maithili Conference is held every year to preserve promise of continuity, togetherness and identity. This term, the Conference was held in Kathmandu on Paush 7–8, 2067 or December 22–23, 2010. The Coordinator of the programme was Mr. Ram Bharos Kapari 'Bhramar' who is a visionary and revolutionary for Mithila-Maithil cause. He is a well-known literary figure, too. As a journalist, he has established himself by publishing magazines like 'Gamghar', 'Anjur', 'Archana', 'Angan', etc. The programme began on Paush 7, Wednesday with much fanfare. A procession of Maithils from both Nepal and India, clad in their special Maithil costume 'dhoti-kurta' and 'paag-dopatta' signifying their civility and culture, started from Hanuman Dhoka, Kanthmandu Nepal at 12 am. 'Kasthamandap' which is said to be made up of the wood of one single tree is situated at Basantpur, the western side of New Road in the central part of Kathmandu. In front of 'Kasthamandap' lies Hanuman Dhoka, Darbar Chowk and facing it across the road is situated "Kumari Temple", the abode of living Goddess. The procession started from the same Hanuman Dhoka Darbar. The inscription on the big banner read –

LET'S GO TO BASANTPUR AT 11 O'CLOCK ON PAUSH 7
TO TAKE PART IN MAITHILI JAGARAN RALLY
OUR LANGUAGE, OUR IDENTITY
OUR CULTURE, OUR SELF-RESPECT

Before the procession moved on, Ram Bharosh Kapari's strong emotive voice rose in the air, "We have the right to safeguard and respect our mother tongue. This is an awakening rally for protection of our civilization, culture and identity." The spirited procession moved on to Nepal Academy, Kamladi, Kathmandu under the leadership of 'Bhramar', ranting slogans in the air. Participants were representatives from our own country and abroad. The slogans continued ranting in the air till we reached the venue, after crossing nearly a distance of one and a half kilometre.

In the conference hall of the Academy, at the fixed hour, an exhilarating lady's voice marked the auspicious occasion--"Sarb Mangal Magleiry ……?" The veteran announcer from Rajbiraj, Nepal was Sadhana Jha. In the centre on the dais were seated the Chief Guest, His Excellency President Dr. Ram Baran Yadav, along with Deputy Prime Minister Vijay Kumar Gachchhedar, Minister for Culture Minendra Rizal, Coordinator Ram Bharosh Kapri 'Bhramar', Dr. Baidya Nath Chaudhary "Baiju", Kamala Kant Jha, Sanjay Sarawagi, and Chancellor of Nepal academy, Mr. Bairagi Kainla. Academician Dr. Sanjeeta Verma, Nepal Academy, distributed and put on badges to the guests. Consequently a welcome Maithili song written by 'Bhramar' was sung--"Ham Maithil Chhi, Maithili Hamar, Sammelan Ajuk ho Ajar-amar". The singers were famous Rama Mandal, Hari Shankar and Vandana Mainali etc.. In his welcome speech, Mr. Kapari said, "After three year's constant endeavour, Maithili International Conference has been able to take the present shape. This has to be internationally recognized. Maithili is the second language of Nepal. It has offered unparalleled contribution in building language, art and culture. On the occasion Kathmandu Declaration will follow. The basics and the status of Maithili language and Maithil culture will be discussed. When the new constitution of Nepal is written, Maithili must preserve her safe position. The opportunity of employment in Maithili is approaching. There is, however, a shortage of Maithili scholars. All the languages will be listed. Like others, Maithili language must get governmental protection. A trust in the name of Vidyapati has been established. It has ten million Nepali rupees as the seed money. Books in our own language will be published; prizes will be offered. The President here is a Maithili speaker and an internationally recognized personality. The affluent history of Maithili language as well as literature which has been left as a pale and feeble ray under a cloudy sky must be illuminated." Welcoming his Excellency the President and the present guests, he concluded his speech with the slogan "Maithili Zindabad" ("Long

Live Maithili").

His Excellency President Dr. Ram Baran Yadav inaugurated the ceremony by lighting a decorative lamp amidst thunderous clapping. He released the Souvenir published on the occasion, and graced a play named 'Bhaiya Aelai Appan Sworaj' by Ram Bharosh Kapari 'Bhromar' following it.

Then Dr. Ganga Prasad Akela announced reputed awards. Accordingly, 'Mithila Ratan' award was conferred on honorable Dr. Yogendra Prasad Yadav and Tara Nand Mishra and 'Mithila Sri' award to honorable Satya Mohan Joshi, Dr. Jagman Gurung and Dr. Prafful Kumar Singh 'Maun' by His Excellency the President. Dr. Nobel Kishore Rai was offered the award later as he was absent that day. Expressing his good wishes Dr. Baidya Nath Choudhary 'Baiju' said the Himalays might melt down completely but the relation between Nepal and India shall never. The friendship between the two nations is like the time immemorial meeting point of the Ganga, Yamuna and Saraswati. This is the Seventh International Maithili Conference. About ten million of Nepalese are Maithili speakers. Coordinator Ram Bharosh Kapari 'Bhramar' is the undisputed leader of this historical Conference.

Vice-Chancellor Bairangi Kainla admitted that Maithili is one of the oldest languages. It was used as the state language for 240 years. The importance of the language with literary philosophical point of view is undoubtedly unforgettable. Vidyapati Akshya Kosh (Vidyapati Non-operational Fund) has been granted by the Ministry of Culture. One's mother tongue is the medium of group communication. As much as there is variety in a language, so much energetic and affluent does the language remain, and Maithili enjoys that position. This conference is an example of illumination. It will add to the expansion of honor and self-pride, and prove motivational.

Minister for Culture, Dr. Minendra Rizal, said that Maithil culture, custom and language have their own typical importance and identity. This is a symbol of honor for the Maithil community. Maithils have their own identity regarding their prosperity, tradition and Maithili has its own way of protection. It's natural that each and every flower has its own essence and color. The Ministry of Culture is committed to development of all languages and cultures. In this way, the tie of unity will gain strength. May Maithili language and Maithil culture be immortal!

Deputy Prime Minister, Mr. Vijay Kumar Gachchhedar, warned that if the culture of a community is destroyed, their existence is also destroyed. If the culture of a community is in danger, nationality itself is in danger. Mother tongue upholds every person's self-pride. So it's essential to safeguard and develop one's mother tongue. Many scholars of highest repute worked for the development of Maithli language. Folk heroes like Salhesh, Dulara Dayal, Lorik, and Deena Bhadri have contributed to the development of the language.

In his inaugural speech, President Dr. Ram Baran Yadav said, "Maithili, the language of King Janak and Mother Janaki is the language of not only the Terai people but also of the whole nation, and of course, its second language. This language works like a bridge to maintain good, neighborly relation between India and Nepal. Our country is multi-lingual and multi-cultural. So it's essential to safeguard the language and culture of every community. Only then the nation will be prosperous. Maithili enjoys the second position as it is spoken by the majority of the population after Nepali.

Educationist Jibachh Mishra, citing an extract from a Sanskrit shloka said that as a golden bangle studded with diamond illuminates in the hands of a dancing girl, so does the Maithili International Conference, and accordingly the event must be successful in achieving its objectives.

The song "Jay Jay Bhairabi ...." sung in praise of Maithil home deity by Kunj Bihari Mishra enchanted and exhilarated the audience. Mr. Kamala Kant Jha, well-known for his superb way of stage-conduction, spoke of the specialty of the Conference using similes and metaphors, and left the audience spellbound.

Well-known singer Rama Mandal sang the melodious song "Sagro Ghumio, Phirou Muda Mithila Men ...." from the cassette "Made in Mithila". Those who accompanied him were Shivchandra Das on the keyboard, Beni Madhav on the 'tabla', Kamal Mandal on the guitar and Bikash on the drum.

A short dance-play 'Jat-Jatin' by Ram Bharos Kapari 'Bhramar' was enacted by Ramanand Yuva Club, Janakpurdham. The actors were Ujjwal Kumar Mishra (Jat), Smiriti Mishra (Jatin), Awadhesh Kamat (fisherman), Ajay Mandal, Ritesh Sah, Rakhi Sah, Sanu Singh, Sunil Singh, Pankaj Jha, Sonu Raut, Jyoti Jha, Nisu Sah, Chanda Lama, and Punam Mishra. The playback singer was Rajan Mishra. Those who supported were Santosh Jha (music), Bikash Karna (drum), Anill Mishra (keyboard), Rama Mandal and Smiriti Mishra (song presentation), and Anil Kumar Mishra (lighting and direction).

Majestic classical dance of the famous dancer, Ms. Nalini Choudhary, left a lasting impression on the minds of the audience. She presented "Kuchi Puri Dance" on Bhairabi and Nand Gopal Dance as a magician.

Conclusion

1. International Maithili Conferences had so far been organized in India only. This time it was organized in Nepal, and by gaining its international shape, proved to be true to its name.

2. This conference has historical importance as it was inaugurated probably for the first time by the President of a nation.
3. Ministerial level participation had taken place in the past also. The then Deputy Prime Minister of India Mr. Lal Krishana Advani had participated once. In the same way the presence of the Deputy Prime Minister in this Conference had its own importance.
4. The program was organized and concluded in a scientific way, especially from the arrival up to the departure of the President.
5. The schedule of the program was fixed and strictly followed. A little change in time-table is negligible. For example, the morning procession began one-hour late.
6. A zeal and newness in the Coordinator's thought and vision was felt. The program was run in a well-managed time constraint, with only a nominal change where deemed extremely necessary.
7. The management part was excellent. If any participant missed the event, they missed a lot.
8. The participation of more (people) than the targeted caused some hurdle to the program. The Coordinator had cautioned the concerned about the issue all the way from Tirupati to Vidyapati Sewa Sansthan, Darbhanga. As the Coordinator's request was ignored, it affected the management and the participants had to suffer to some extent.
9. The procession beginning from Basantpur with enthusiastic participants, well-clad in Maithil costume and their voices/slogans rising high in the air all the way, entered the Conference hall of Nepal Academy. This awakened the feeling of self-respect, pushing aside the feeling of inferiority complex, and above all, sent a message of awakening of Mithila in the minds of the speakers of other languages.
10. In spite of proper arrangement of bag, badge and identity card, all participants could not be benefited. Identity cards meant for entrance into the Conference hall were not duly used. However, at the eleventh hour an arrangement for general entrance of the participants was made easy by the Coordinator so that no one was left outside and missed the opportunity of attending the most spectacular inaugural program.
11. A Souvenir and a play book by "Bhramar" were released. These certainly added to the literary treasure of Maithili books.
12. The presentation by the Master of Ceremony was not so effective.
13. The Conference was successful and has become an event of historical importance from many viewpoints. A review of the same can give valuable impetus to such events anywhere in Nepal, India, or abroad.
14. The most notable event was establishing the Vidyapati Trust.

Next day, on Paush 8, Wednesday, a seminar dedicated in the memory of Vidyapati, under the arrangement of cultural department of Nepal Academy began in the seminar hall of Agrawal Seva Kendra at Kamal Pokhari at 10:20 am. The program was conducted by Mr. Santosh Kumar Mishra. The first working paper was presented by Dr. Yogendra Prasad Yadava and the program was presided over by Mr. Kamala Kant Jha. The Coordinator of the Seminar was Mr. Kalikant Jha and the commentator was Chandresh.

Dr. Yogendrea Prasad Yadava expressed his views reading his paper on 'Maithili Verb Correspondence and Social Foundation of Agreement'. He talked about inter-community relation, speaker-listener reflection, and scientific system in modern linguistics on following the language of scientific system, collection of facts and analysis of facts. The analysis of the fact by synthesis of the sound becomes the use. He said it becomes advanced level foundation. For example, the verb 'gives' in a Maithili sentence has all three forms: 'give' (देब), 'giver' (देनिहार) and 'the thing to be given' (देबवला वस्तु). The second example was "We laughed" (हम हसलहुँ). This has only one form. It means the verb has been divided into different categories. Another example was "He gave me a book at my house" (ओ घर पर हमरा किताब देल). In this sentence, घर पर is not compulsory but optional.

In yet another example, "This is his house" (ई हुनक घर छनि), हुनक (his) is not argument for the verb. Similarly, "for him" (हुनका लेल) is no argument for corresponding verb in "You worked for him" (तो हुनक लेल काज कयलहुँ). In a sentence, noun or pronoun may just do without a verb. Dr. Yadava, along with describing the kinds of verb, said that work-correspondence in Maithili is special and complicated.

In the floor discussion, critic Dharmendra Bihwal, criticizing on the presented paper said that it was difficult for him to speak further concerning linguistics and language. It is essential to collect facts in relation to Maithili and link the language to linguistics. The use is very important. There should be a criterion for the language. The relation of speech is to be elucidated. The standard of the language has to be determined. How have other languages affected ours? The use of 'bibhakti' and the impression of Hindi and Nepaliness have to be made clear. An analysis of Maithili on the foundation speech has to be made. A language is directly linked to livelihood. The language should be strictly confined to linguistics. Anarchy in Maithili language will essentially persist for four or five years, and then only standardization of the language will take place.

Prof. Vijay Dutta stressed the need for

distribution of photocopy of the paper among participants. What was said about 'argument' should be explained more clearly. The subjective feeling must be clarified objectively.

Mr. Bhagwan Mishra appreciated the distribution of the work paper but complained why it was not handed before.

Mr. Praveen clarified that the problem of the use of verb exists in Maithili. The first person, the second person, and the third person have to be analyzed – e.g. "Ham pothi padhait chhi" (I read a book), "O pothi parhaiya" (He reads a book), O pothi parhait chhathun (He reads a book). Another example was—"Raja ayalah" (The king arrived), "Nokar ayal" (The servant arrived). The work paper should not be presented just for the sake of formality. This is not brief but a very brief quest.

Dr. Baidya Nath Chaudhary 'Baiju' informed that 'mauni', 'pauti', 'dala', 'birhara' etc. should be clearly distinguished although they sound similar. There is a difference between the tone of Maithili in Jaynagar and Janakpur—e.g. 'la gelathu,' 'lageleiy,' 'lei gelei,' but the dictionary follows one uniform pattern.

Mr. Gopal Jha asked, "What's the policy of Mithila state? What is the language policy in relation to 'Mithilakshar' script? Is the uniformity in language necessary? Can there be only one standard language?"

Scholar and lawmaker Mr. Ramchandra Jha stressed that uniformity in Maithili is not possible. One verb is used differently in different parts of a village or in a family, too. It is an everyday phenomenon. It is not very important whether we speak correct Maithili or not. The standardization of the language is not improper but it should serve the spirit of common language.

Replying to the query, Dr. Yogendra Prasad Yadava informed that he had to prepare the paper in a very short time, and so he could not get it photocopied. He was able to present a summary only. The time for presentation was fixed for one hour which was later reduced to 15 minutes only. Linguistics is a subject which is not to be dealt fast. There are regional, social, and personal differences. I am not in favor of standardization of Mathili language amidst such differences. If the language of one percent against eleven percent is standardized, the latter will have to bear loss. According to George Abraham Grierson, the impression of other language has made Maithili complicated. It is, however, natural that one language affects another. It will not be proper to tie the incorrect language with the correct one. Regional impression is but natural. There should be natural linguistic development. There should be an endeavor for linguistic uniformity in education, examination, administration, and media.

Mr. Kamala Kant Jha was of opinion that uniformity is essential in textbooks. But it may not be desirable in a short story, poem, novel, film, and so on.

Dr. Baidya Nath Chaudhary warned that if on pretext of standardization Maithili is colored, polished and confined to a particular circle, it will be like keeping it closed in a box. It needs freedom. He presented a line of Vidyapati "Tonhe je kahai chhah Gaura naach" and asked the audience whether the term 'Tonhe' is Maithili or not. Mr. Ashok Jha from Kolkatta opined that Maithili be made a medium language in examinations. It should have a wider range.

Dr. Rebti Raman Lal said that Maithili is ignored as the medium of instruction and the meaning of 'mother' is never taught, for example, as 'maay' (dfo) but 'amma' (cDdf) or 'ama' (cfdf). It has to be considered seriously. Mr. Devendra Mishra underlined the need for uniformity in the language. A campaign for making it an instructional language has to be launched. The Government of Nepal (GoN) must follow the policy of impartiality for all languages. Under the new formed policy, Maithili deserves equal treatment. It is, however, not on equal footing in the curriculum. If it is in primary level curriculum, it is as an optional subject. The Public Service Commission has to arrange/change its curriculum in such a way so that examinees are enabled to write answers in their own language.

Mrs. Pushpa Thakur said that the color of milk has been the same for ever. Maithili language spoken correctly or incorrectly is acceptable, and no one is going to be insulted or ridiculed on that pretext. A language should naturally be spoken cautiously.

Replying again, Dr. Yogendra Prasad Yadava said that Maithili is written in Devnagari. A technique has been developed and Janaki Font is used, where by writings in Devnagari are automatically changed into Mithilakshar. We have got right to basic education from grade 1 to 8 through our mother tongue, Maithili. All speakers of different languages must have the right to basic education in their respective languages. But the most important thing is the execution or practice. Even in the Public Service Commission exams, Maithili may be used but as an optional medium.

Mr. Santosh Kumar Mishra said that writings in Devnagari can be directly changed into Mithilakchhar by using Kirti Font.

The second session was conducted by Mr. Ashok Jha, Mr. Taranand Mishra, Dr. Prafful Kumar Singh 'Maun,' Mr. Ram Bharos Kapari 'Bhramar,' and Mr. Chandresh under the coordination of Mr. Kalikant Jha 'Trishit.' The assignment paper was presented by archaeologist Mr. Taranand Mishra as "Mithila's cultural heritage and the ways of their protection." This program was chaired by Mr. Ashok Jha from Kolkatta.

Mr. Mishra related Maithili with the Aryans and

presented his views in reference with: (1) Brahamnic books, (2) Bauddha Resources, and (3) Jain Resources. There are however, two thoughts. Generally, Brahamnic books are considered. Jain and Bauddha sources have not been mentioned amply. His talk referred back to the arrival of Bideh Madhav to the times of Sattapatha Brahman, the campaign of the east from the west, the composition of the three Vedas on the banks of the Sarswati, Tirbhukti-Tirhuti, and so on. He also talked about 30-40 statues of the Karnat age that have been discovered. Besides, he mentioned about the v:Palak State discovered in Dharan and Chandrikapur and elsewhere. He drew attention towards the lack of protection of what is discovered. He stressed that excavation and exploration have to be made through the archaeological channel and protection by the government is highly essential.

Critic Dr. Prafful Kumar Singh 'Maun' pointed out that Mr. Mishra in his Paper has been repeating the same issues for two years. He talked about some places including Bheriyari. He spoke clearly that accommodation is much desirable. Mr. Bhagwan Mishra, giving a detailed description, emphatically stated that Vidyapati had stayed at Banauli in Mahottari district.

Mr. Gopal Jha complained that the paper did not contain the whole accounts and status of Mithila. Dr. Ganga Prasad Akela suggested that a copy of the paper should have been handed to every one.

Coordinator Mr. Kali Kant Jha affirmed that the attention was highly drawn towards welcoming and flattering people and not towards all the activities as a whole.

Making an analytical comment, Mr. Chandresh said that Dr. Yogendra Prasad Yadava unfolded a very critical issue in a highly complicated subject like linguistics. He said that Dr. Yadava is undoubtedly an exclusive scholar of the subject. His contribution to Maithili literature and language are well-known. He has expressed his ideas in a vivid way, understanding the given subject with a visionary's eyes. His assignment demanded complete one hour for reading, but he had to brief it in only twenty minutes. It was but natural that he could not make correspondence between the principles and the practices. It is really not possible to present such a complicated subject so easily. After all, he utilized his time very capably. There was some deviation. He, however, was able to clarify the bases of agreement of verb by citing numerous examples. Had be been allowed more time and had he taken up the issue with more examples, it would have been an interesting and understandable topic for the listeners.

Mr. Taranand Mishra's assignment paper was favorable to his liking. He had presented such assignment before. Repetition breeds distaste. After all, his paper had been prepared with great effort and care. He put his ideas in a clear-cut and expressive way. He talked about some new places that deserved exploration. When he talked about the division of periods concerning statues, Dr. Maun and some others objected and claimed that the statues belonged neither to 'Gupt Kal' nor 'Pashan Kal.' Whether they belonged to 'Pal Kal' or not is still a matter of exploration. It must be discussed. Long committed research will unfold the real picture. After all, it was a well-conceived assignment.

Both the assignments were full of merits and demerits and both must properly be analyzed. The seminar proved important because of the powerful elements in assignments.

The Conference Coordinator Ram Bharos Kapari 'Bhramar' informed that three papers were to come and three scholars had been entrusted with the responsibility. The third scholar who had to prepare his paper especially on folk-king Salhesh Deena Bhadri has intimated about his illness and inability via e-mail. The already read two papers lack perfection. If the papers had been submitted two or three days before, every one would have had a copy of them. In a sense, the papers are not complete till now. There are still some good (positive) and bad (negative) aspects. But in future, such mistakes have to be reformed. Mr. Ashok Jha from Kolkatta made clear that we have to live up to the present state. We talk about the pond without any fish. New subjects have to be introduced. We should not continue presenting the same note everywhere.

The seminar ended at 1:20 pm, and after meals, a poetry recitation program in memory of late Dr. Dhirendra Jha followed. It was presided over by Ms. Pushpa Thakur. Others present on the dais were Coordinator Ram Bharos Kapari 'Bhramar', Dr. Kali Kant Jha and Chandresh. Out of four dozen listed poets, only half of them were able to recite their poem as the scheduled time for the Vice-President's arrival was nearing, and in the mean time, a banner for Closing Ceremony was put up. The hurried recitation had prominent poets like Mrs. Mina Thakur, Praveen, Bihul, Parba, Rebti Raman Lal, Karuna Jha, Shyam Shekhar Jha, Promod Jha, Janak, Dhirendra Premarshi, Sudhanshu Kalakar, Vijay Dutta, Mani Kant Jha, Vijeta Chaudhary, Nagbanshi, Ramnarayan Deo, Dinesh Jha, Devendra Mishra, Ashok Jha, Chandradeo Jha, Sadhana Jha, Ayodhya Nath Chaudhary, Akela, Chandresh, 'Bhramar,' Santosh Kumar Mishra and others. Chairperson Ms. Pushpa Thakur, making a short review of the recited poems, concluded the program by reciting her own poem.

Conclusion:

1. The poetry recitation program was a little delayed from the scheduled time.
2. It was curtailed due to the Vice-President's timely

arrival.

3. The pre-planned list of poets was short. The number of poets grew gradually as they were coming in the middle of the program.
4. There were an appreciable number of poetesses.
5. There was a lack of variety in poems. Most of the poems had almost the same impulse. But they were in tune with the present scenario of the nation.
6. Many poems could not be recited and that left the listeners grudging.
7. Some poems sounded dull as they had been recited before.
8. The absence of visionary poets was apparent.

The Closing Ceremony of the last session started at 3:20 pm on 23rd December 2010. The Chief Guest was Vice-President Mr. Parmanand Jha while Mr. Ram Bharos Kapari 'Bhramar' was the Chairperson. Seated on the dais were Mr. Kamla Kant Jha, Dr. Baidyanth Chaudhary 'Baiju,' lawmaker Bimlendra Nidhi and Dr. Ramawatar Yadav. Mr. Krishna Chandra Jha emceed the program.

In his welcome speech, Mr. Jibachh Mishra expressed his pleasure saying that International Maithili Conference would prove a milestone. It will be unforgettable guaranteeing growth and development of Maithili language. It will send a positive and encouraging message among Maithili speakers throughout the world.

On the occasion, Dr. Ram Dayal Rakesh's book "Samay Shila Par" was released by the Vice-President. Expressing his joy, Mr. Kamla Kant Jha opined that Janaki stands for Maithils. We have also discussed how Maithili can be enriched and protected from external interference. The program was very much emotional.

Commenting on the two-day program, rapporteur Chandresh said that politics cannot be a hurdle to social and emotional relations. Linguistic and cultural nationalism not only links one anotherCh:'s heart but also deepens the relationships bearing strong confidence. This IMC is a campaign which works for linkage, and medium of rousing awareness. It has also upheld burning problems of Maithil society. The inaugural speech by the President and the presence of the Vice-President in the Closing Ceremony have strengthened and expedited the campaign. It has exhibited depth of human relationship and worked for restoration of human values. It has also exhibited common anxieties towards language development, protection of cultural heritage, social injustice and exploitation. These issues were also taken up and conveyed in several poems recited on the occasion. Some poems were full of love for the soil of Mithila. Stories of physical, mental, and emotional exploitation of women surfaced in most of the poems written by poetesses, naturally accompanied by voice of opposition, pain, anger, and resentment.

In course of discourse, participants raised their voices significantly against injustice. An account of life-struggle related with agriculture, education, commerce, livelihood, and similar issues was also presented. The importance of the Conference lies in the strengthening of faith and confidence.

Two one-act plays based on folk culture 'Jat-Jatin' and 'Domakach' were enacted which would certainly give birth to new awakening in the society. Dances and songs presented in the cultural program were very impressive. This Conference will be called historical, and it will live long in our memory. Dr. Yogendra Pd. Yadava, in his speech, made clear that the issues of language, literature, culture, and arts were seriously discussed. It will be fruitful in future Maithili development. It should be widely covered in media so that Maithili speakers will be benefited.

Dr. Ramawatar Yadav said that it was but natural to be anxious for the form of Maithili language. The form has to be fixed. Democratization of folk-language should be made. Till 1885, Grierson produced seven written grammar books. He has talked about all the dialects. The present form has been mentioned. Are there five good dictionaries available in Maithili language? While talking about a dictionary, Pt. Dinabandhu Jha's name comes first. 'Balu' term is quite popular, spoken and written widely but you cannot find it in a dictionary. Maithili has to be read. It is not easy to read in Maithili. Ambiguity must be avoided. This IMC is somewhat superior, but not very much superior.

Mr. Bimalendra Nidhi said his words fail him expressing his heart-felt emotions. The campaign has to be supported with active dedication. The Nepal-India relation is historical in all respects. The struggle for language and culture is not for political favor but for propagation of language and culture. There must be development and protection of language and culture. In the middle of the program, the Vice-President was honored by being offered a shawl. Dr. Baidyanath Chaudhary and Kamal Kant Jha were honored by the Vice-President by offering each of them a shawl. It must be understood that all on the dais, including the former coordinator, were honored by offering each of them a garland of flowers, 'paag' (a prestigious cap) and a shawl. Dr. Baidyanath Chaudhary 'Baiju' repeated that Mr. Ram Bharosh Kapari 'Bhramar' was foremost in bringing success to the program. He proclaimed that the 8th IMC would be held in Guwahati, Assam, India. He also proclaimed of the would-be executive body that would comprise 125 scholars. He informed that the patrons would be Dr. C.P. Thakur, Dr. S.P. Singh, Vice-Chancellor, PU, Dr. Yogendra P. Yadava, Kamdeo Jha (President), Ram Bharos Kapari 'Bhramar,' Kamla Kant Jha, Dr. Baidyanath Chaudhary 'Baiju' (Secretary-General), Ashok Jha, Shwetamber Jha, lawmakers

Ram Chandra Jha, Sarswati Chaudhary, and Bimlendra Nidhi, Dhirendra Premarshi, Manikant, Chandresh, and Amareshji. He informed that the list of the names to be included in the executive has been made available from only one region, Rajbiraj. He was confirmed when lists from other regions were made available, the executive members would total 125. He believed that the representatives must be hard workers for Maithili.

Mr. Kamala Kant Jha seconded the proposal and invited the audience to come to Kamakhya to be secured in the lap of Goddess 'Mahamaya.' The audience endorsed the proposal unanimously by clapping.

The Vice-President in his ceremonial speech exclaimed with pride that 'dhoti' and 'paag' are the identity of Maithils. "I am present here not as the Vice-President but as Parmanand Jha, a Maithil. Everybody knows the importance of language, costume, and culture for his/her identity. 12.5% people of this country speak Maithili and that's why it has been rightly named as an International Conference. The contributions that the Conference made will be debated by scholars, but it will also work as a guideline about the position of Maithili language in the new Constitution. Maithili has enjoyed the position of state language in this country. Then why has this language been neglected? This is a very serious question. If we do not pay attention to this question, what's the use once the constitution is written? It will be like 'a doctor reaching after death.' This is the right time. Maithili speakers have to be cautious; media can play a big role in the development of a language. Daily papers must come out. For this, with the help of leaders and scholars both, if daily papers or magazines are brought out, then there lies golden future. I want to draw attention towards the state of Maithili. For example, in the past when people joined civil service, they got some marks for their Masters Degree. For the last forty six years, Masters Degree holders in Maithili and Hindi were bereft of the benefit. In the first census, there were neither Maithli, nor Bhopuri, nor Awadhi speakers mentioned. Even today, people are divided on language issue."

The Vice-President showed his anxiety at the low number of presence of the local people in contrast to the presence of more than one hundred participants from India. "Apparently we didn't give much importance to the Conference. When this country enters into federalism, the federal government must give space to Maithili but what about the central government? 'Vidyapati Akshaykosh' having only ten million rupees is meaningless. This is only for show. This is just a seconded statement. I do not know of any program which was attended by such VIP presence in Nepal. It is the responsibility of the present community here to retain the importance. I wish health and happiness to all honorable people present here so that they could contribute widely to the development and protection of Maithili language and literature, Although this program has taken place in mid-winter, but the heat it has generated should retain. The government has already accepted that Maithili is the second language of Nepal. We have not felt the importance the second language of a country should attain from the government. In coming days we have to step forward very thoughtfully. For this, the torch of awakening should burn in every heart."

In his presidential speech Mr. Ram Bharos Kapari informed that the Conference took place amidst and despite unfavorable circumstances. The political situation in Nepal is full of uncertainties, and it is difficult to foretell what happens when. Situations change fast. But determination is a great thing. "I want to greet every one heartily. It is fortunate that the ceremony was opened by the President and closed by the Vice-President. Maithili has its golden future. On organizational aspect, we have received all kinds of support at every step. Everyone from his/her place supported in creating a congenial atmosphere which resulted in smooth functioning. If we talk about the first and foremost contribution offered by a single person, he is undoubtedly Mr. Parmanand Jha, and Mr. Bimalendra Nidhi surely occupies the second position.Mrs Mamata jha,chairman of sajha prakashan, Er. Satya Narayan Sah, Mr. Jibachh Mishra, Dr. Ganga Pd. Akela,Bikram Mani Tripathiji, Deo Naraya Yadav, and Brikhesh Chandra Lal helped immensely from their respective places. Bags for participants were made available with the kind co-operation of lawmaker Kashi Devi Jha. I learnt a lesson that harsh words do not attract money, but affection, goodwill, and co-operation by friends do. Nepal Academy's contributions are appreciable. A big sum of ten million rupees is reserved in 'Vidyapati Akshaykosh' in Nepal. With its interest, books will be published, and rewards will be given. This proposal is sure to be passed in the next cabinet meeting. It will be a reserved property in the name of Maithili. This is the main achievement of the Conference. Nepal-India's cultural relation is ever-lasting; our relation will continue, and Baijuji will go on strengthening the relation. Maithili is the second language of Nepal; the language of our mother."

Artistes form Minap and Ramanand Yuva Club presented their shows very well, and that added fun and flavor while contributing to the success of the program. Literary figures also contributed immensely. We will continue organizing the conference in Kathmandu in future as well. The date and time, however, may change.

'Domkach,' an one-act play, full of dance and songs, was enacted by Mithila Natyakala Parishad

(Minap). The role players were Sunny Rout (dom), Sapna Shrestha (domin), Madan Thakur (churiwala), Ram Narayan Thakur (bariyatiwala), Rima Rimal (malikini), Parmesh Jha (Rana), Ganga Kant Jha, Rabindra Jha, Somu Thakur, Vandana Jha, Sanjeev Singh, Rakhi Jha, Mukesh Mishra, Mukesh Thakur, and Vidya Malick. The director and translator was Parmesh Jha. The singers were Sangita Deo, Neha Priyadarshini and Sunil Mallick. Sunil Mallick also played music while other instruments were played by Shambhu Karna, Lalan Jha, Mukesh Mishra, and Ghanshyam Mishra.

The cultural program, owing to high level presentation, had a magical effect on the enthusiastic audience. The singers and players altogether were Rashmi Jha, Ranjana Jha, Kunj Bihari, Baijuji, Sunil Thakur, and others. Usha Paswan presented a magical dance. Other dancers were Upendra Bhagat Nagbanshi, Mithilesh Jha, and Chhotu. Throughout the program the hall was echoing with clapping sounds.

Conclusion:

1. The program succeeded in a well-thought, well-planned, and logical manner.
2. With some exceptions, programs were carried on regularly and punctually.
3. The opening and the closing ceremonies attended respectively by the President and the Vice-President enthused a feeling of pride.
4. The rally in Maithil costume was surely a symbol of awakening. It spread the message of awakening for language.
5. The topic for the seminar was meaningful and the selection of speakers was significant. Even the aspect of folk literature had been kept in mind but, unluckily, it could not take place for some obvious reason that was made clear. After all, the concerns expressed for the growth and development of language and literature, and the underlying challenges were discussed prominently.
6. When subjects related to literature are attempted to be translated into revolutionary slogans, what problems succeed were made apparent. 'I' also counts much or interference in every subject leads to lightness. Literary glorification was felt. So it was realized that future steps should be taken with much care and consciousness.
7. It was seen how emotional relation predominates over politics. Even in the teeth of sour-sweet relation, the program ended amicably.
8. Voice of resentment against valueless system came out strongly.
9. Repetition of the same poem time and again by some poets brought sour taste and that was vividly clear.
10. The participation by women poets (poetesses) was appreciable. Some were able to produce effect and 'promise.'
11. Some voices rose strongly disclosing man's evil mentality, which added to the importance of poem, identifying people's awakening.
12. The media persons supported to their best.
13. The participation from distant regions was remarkable, whereas it was negligible at local level.
14. The managing capacity of the Coordinator along with active members came out forcefully which later got quite a momentum.
15. We had a good managing lesson on how a program is carried and how hurdles come on the.
16. Giving unnecessary details has been avoided.
17. The stage remained disciplined. During the conduction of the program, the greed for grabbing the stage, as during poetry recitation, exposed the concerned person.
18. This Conference, on quality grounds, was superior to the past conferences.
19. The future program was proclaimed to be held in Guwahati on December 22-23, 2011 (7-8 Paush 2068).
20. The publication of the souvenir and the release of books were significant.
21. The criterion made for participation in the program was not duly carried out and that affected the program to some extent. For example, 'one invitation, one person' was ignored.
22. There was good arrangement of food and residential facilities.
23. This program will work for guidelines, and consecutively, the next program will present a well-planned, static posture.
24. People had a great fervor/favor and appreciation for the cultural program and the special dance on folk literature. This International Maithili Conference, 2067, Kathmandu which proved historical had the following members in the Advisory Board – lawmakers Bimalendra Nidhi and Ram Chandra Jha, Dr. Ramawatar Yadav, Dr. Yogendra Prasad Yadava, HR member Ram Nagina Singh, Mr. Brikhesh Chandra Lal and Executive Coordinator Ram Bharos Kapari 'Bhramar.' Other members included Dr. Ram Dayal Rakesh, Dr. Sanjeeta Verma. Er. Satya Narayan Sah, Mr. Jibachh Mishra, Mr. Prof. Deo Narayan Yadav, Dr. Ganga Pd. 'Akela,' Mr. Dharmendra Jha 'Bihwal,' Mr Kalikant Jha 'Trishit,' Mr. Santosh Kumar Jha, Mr Baidya Nath Choudhary 'Baiju,' Mr. Kamdeo Jha and Mr. Mani Kant Das. Overall, the program made a deep seat in people's mind and heart.

Manmit Kutir, Rajput Colony
Maulaganj, Darbhanga
846004 (Bihar)
02430640883

अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलनक

काठमाण्डू घोषणापत्र - २०६७

नेपालक राजधानी काठमाण्डू जाहि ठाम राजभाषाक सम्मान प्राप्त क' चुकल छल ओहि ऐतिहासिक काठमाण्डू उपत्यकामे वि.सं. २०६७ पुस ७ आ ८ गते (२२, २३ दिसम्बर) आयोजन भेल अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, जकर उद्घाटन समारोहक प्रमुख अतिथि छलाह सम्माननीय राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव आ समापन समारोहक प्रमुख अतिथि छलाह सम्माननीय उपराष्ट्रपति परमानन्द झा, जाहिमे स्वदेश तथा विदेशक मैथिली आ मैथिलसँ सम्वद्ध संस्थाक १५० प्रतिनिधिक सहभागिता छल, ओहि गौरवपूर्ण ऐतिहासिक सम्मेलनद्वारा मिथिला, मैथिल आ मैथिलीक वर्तमान समस्याक विभिन्न पक्ष पर वृहत्तर विचार-विमर्श भेल आ समस्या समाधान लेल मैथिल समाज आ सम्बद्ध दुनू देशक (नेपाल, भारत) सरकारसँ सहयोगक अपेक्षा करैत परामर्श देबाक उद्येश्यसँ निम्नलिखित घोषणा-पत्र जारी कयल गल।

१. नेपालमे संविधान निर्माणक काज भ' रहल अछि, आ संघीयताक मान्यताक आधारपर संविधानमे मिथिला राज्यक व्यवस्था हुअए से ई सम्मेलन माग करैत अछि।
२. नेपाल, भारत आ विश्वक विभिन्न देशमे आठ करोड़सँ अधिक संख्यामे रहनिहार मैथिली भाषीक पहिचान स्थापित करबाक प्रयास हुअए। ताहि लेल खास क' नेपाल आ भारतक सरकार एवं मैथिली भाषीक दिसिसँ आवश्यक कार्य हुअए।
३. मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृति, लिपि आ कलाक संरक्षण हेतु आवश्यक योजना बनाओल जाए आ कार्यान्वयन हेतु नेपाल आ भारतक सरकारपर दबाव सिर्जना कएल जाए।
४. नेपालक भावी संविधानमे मैथिली भाषाके सम्मानजनक स्थान प्रदान कएल जाए। नेपालक संविधानमे सेहो भाषा-सभहक सूचिकृत कएल जाए। लोकसेवा आयोगमे सेहो मान्यता प्रदान कएल जाए।
५. विद्यालयसँ विश्वविद्यालयधरि मैथिलीमे व्यवस्थित ढंगे पठन-पाठनक व्यवस्था कएल जाए। मातृभाषामे शिक्षाक व्यवस्था कएल जाए आ मातृभाषाके रोजगारीसं जोड़बाक लेल नेपाल आ भारतक सरकार तदनुकूल नीति निर्माण करए संगहि लेखक सभहक संरक्षणक लेल विशेष व्यवस्था कएल जाए।
६. नेपालमे मैथिली सबसँ बेसी बाजल जाएबला दोसर भाषा अछि, तएँ मैथिलीके नेपाली क्षेत्रमे सेहो राष्ट्रीय स्तर पर सरकारी कामकाजक भाषाक स्थान प्रदान कएल जाए। आ मिथिलाक्षेत्रमे मैथिलीकेँ पहिल क्षेत्रीय भाषाक मान्यता प्रदान कएल जाए।
७. नेपाल आ भारतक अतिरिक्त विश्वक आनोठाम बाजल जाएबाला सभतरहक मैथिलीकेँ स्वीकार क ऽ पठन-पाठनक उद्येश्यसँ एक मानकक निर्धारण कएल जाए।
८. नेपाल आ भारतमे छिडियाएल मैथिल संस्कृतिसँ सम्बद्ध पुरातात्विक महत्वक सामग्री आ स्थानक संरक्षण कएल जाए आ संभावित स्थानमे पुरातात्विक उत्खनन आ अन्वेषण हुअए।
९. नेपाल आ भारतक मिथिला पर्यटकीय स्थल सभहक प्रबर्द्धन हुअए।
१०. मिथिलाक्षेत्र पछिला दिनमे विकास निर्माणक कार्यसँ बञ्चित भऽ रहल अछि, ताहि दिसि नेपाल आ भारतक सरकारकेँ ध्यानाकर्षण करबैत भावी दिनमे एहि क्षेत्रमे विकासक कार्यकेँ गति प्रदान करबाक माँग कएल जाए।
११. नेपालक राजधानी काठमाण्डूक राष्ट्रीय अभिलेखालय आ भारत लगायत अन्य स्थानमे रहल मैथिलीसँ सम्बद्ध सामग्री सभहक संरक्षण, प्रकाशन आ वितरणपर जोड़ देल जाए। संगहि दुनू देशक अभिलेखालय, पुस्तकालय सबमे संग्रहित पुस्तक सभहक माइक्रोफिल्म Exchange क व्यवस्था कएल जाए।
१२. ई सम्मेलन बहुलवाद, सांस्कृतिक लोकतन्त्रक विकासपर जोड़ दैत अछि। नेपाल आ भारतक सरकार मैथिलीक संगहि देशमे विद्यमान सब तरहक संस्कृतिकेँ समान नीति तय करए से ई सम्मेलन माँग करैत अछि।
१३. मिथिलाक महिला आ बालबालिकाक विकासक लेल सरकारी स्तरपर विशेष नीति निर्धारण हुअए से ई सम्मेलन माँग करैत अछि।
१४. महाकवि विद्यापति द्वारा १२ वर्ष बिताओल गेल बनौली स्थित विद्यापति गढ़के संरक्षण आ सम्बर्धन करबाक लेल ई सम्मेलन नेपाल सरकारसँ माँग करैत अछि। बनौलीक प्रामाणिकता स्थापना कएल जाए। संगहि सिमरौन गढ़क संरक्षण आ मिथिला नगरक प्रामाणिक खोज, संरक्षण कएल जाए।
१५. सूचना प्रविधिके स्थानीय स्तरपर मैथिली भाषाके स्थापित कएल जाए।
१६. नेपालमे मैथिली अकादमीक गठन हुअए।
१७. महाकवि विद्यापतिकेँ राष्ट्रीय विभूति घोषित कएल जाए। संगहि कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी तिथिके राष्ट्रीय पर्वक रुपमे मान्यता द' छुट्टीक व्यवस्था कएल जाए।

इतिशुभम्

रामभरोस कापडि 'भ्रमर'
संयोजक



Kathmandu Declaration of International Maithili Conference

In Kathmandu, the capital of Nepal, where Maithili had enjoyed the status of state language, International Maithili Conference was held on Paush 7-8 2061 (December 22-23, 2010) and attended by 150 representative participants from native and foreign land. The Chief Guest of the Inaugural Ceremony of the prestigious conference was President Dr. Ram Baran Yadav where as that of the Closing Ceremony was Vice-President Parmanand Jha. In that prestigious, historical conference, different aspects of issues related with Mithila, Maithil, and Maithili were discussed extensively, and for the solution, the following Declaration was made for giving suggestion to the concerned Governments of Nepal and India, while seeking their co-operation.

1. In Nepal, as the new Constitution is being written, this Conference demands the restructuring of Mithila as a state on the grounds of federalism.
2. Maithili is spoken by more than 80 million people living in Nepal and India and other countries of the world. So their identity should be established and the Governments of Nepal and India should initiate the proceedings.
3. Plans for the protection of Maithili language, literature, culture, script, and arts should be made, and the Governments of Nepal and India should be pressurized for it.
4. Maithili language should be provided a respectable position in the future constitution of Nepal. Moreover, all the languages should be listed therein. Maithili should be recognized by the Public Service Commission as well.
5. From school to university, Maithili should be taught and studied in a well-organized way. Education in mother tongue should be provided, and for making it job-oriented, Governments of Nepal and India should make congenial policies and special provision for the welfare and protection of writers.
6. As Maithili is spoken by a vast population, and enjoys the second position, so it should be made the language to be used in government offices on national level, even in predominantly Nepali region. Maithili must be recognized as the first regional language in Mithila region.
7. Recognizing all kinds of Maithili, spoken in Nepal, India and other countries, a standard should be determined for the purpose of teaching and disseminating information.
8. Places and materials of archaeological importance and related with Maithil culture, which are scattered in Nepal and India, should be safeguarded, excavated, and explored.
9. Tourist centers of Mithila in Nepal and India should be developed.
10. Till recent times, Mithila region has been deprived of infrastructure and development works. Therefore, the attention of the Governments of Nepal and India should be drawn up to speed up development works.
11. Books, manuscripts, and writings related with Maithili preserved in National Archives, Kathmandu should be duly protected, published, and distributed, and exchange of microfilm of books preserved in libraries and archives of both the countries should be done.
12. This Conference puts stress on the development of pluralism and cultural democracy. It also demands to determine uniform policy for all the cultures of the country.
13. This Conference demands to determine special policy on government level for the all-round development of women and children.
14. This Conference demands the Government of Nepal to safeguard and develop 'Vidyapati Garh' (fort) situated at Banauli where Vidyapati had spent precious 12 years of his life. The identity of Banauli should be determined. Along with this, the protection and exploration of 'Simraun Garh' and 'Mithila Nagar' (town) should be continued.
15. Maithili language should be grounded on local level through information technology.
16. Maithili Academy should be established in Nepal.
17. Great poet Vidyapati should be declared as a national hero, and the 13th lunar day of Kartik, every year, be declared a holiday and observed as a national festival.

The End

Ram Bharosn Kapari, 'Bhramar'
Coordinator



चित्रमे अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन

International Maithili Conference in Photographs



बसन्तपुरसं रैली निष्काशनक तैयारीक अवलोकन करैत संयोजक “भ्रमर” ।

Coordinator "Bhramar" observing the rally's preparation's march at Basantapur.



सम्मेलनक सहभागी लोकनि रैलीक तैयारीमे बसन्तपुरक अंगनईमे ।

Conference participants in preparation of rally in Basantpur square.



भाषा जागरण रैलीमे सहभागी राजविराजक मैथिली साहित्य परिषद् ।

Participants from Rajbiraj Maithili Sahitya Parisad (Literary Council) in the language awareness rally.



सहभागी लोकनि पंक्तिबद्ध भऽ प्रस्थानक तैयारीमे ।

Participants queueing up for a march .



रैलीमे महिला लोकनिक उल्लेख्य सहभागिता रहल ।

Women had a notable participation in the rally.



देश-विदेशक मैथिल विद्वान, भाषाप्रेमी सभ रैलीमे ।

Maithil scholars, language lovers from home and abroad in the rally.



रैलीक दृश्य ।

Rally's scene.



काठमाण्डूक सड़क पर दलमलित कएने रैलीक सहभागी ।

The rally's participants virtually took over the road of Kathmandu.



काठमाण्डूक नयां सड़क पर सहभागी सभक विशाल जमघट ।

A huge crowd of the participants at New Road, Kathmandu.



रैलीमे कलकत्ताक अशोक झा, दरभंगाक डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजू, पटनाक कमला कान्त झा आ दरभंगाक विधायक संजय सराबगी जी ।

In the rally, Ashok Jha from Kolkatta, Dr. Baidyanath Chaudhary Baiju and MLA Sanjay Sarabagi from Darbhanga, Kamalakant Jha from Patna.



अतिथि पाहुन सभक भव्य उपस्थितिमे रैलीक दृश्य ।

The rally scene grand presence of the guests. In the rally, Ashok Jha from Kolkatta, Dr. Baidyanath Chaudhary Baiju from Darbhanga, Kamalkant Jha from Patana and MLA Sanjay Sarawagi from Darbhanga.



अबधी विद्वान सभक सहभागितामे रैली ।

Awadhi scholars' participation in the rally.



पाग, दोपट्टामे सजल मैथिल सहभागी लोकनि ।

Maithil participants with pag and dopatta (turban and shawl).



महिला सभक सक्रिय सहभागिता रहल ।

Active participation of women.



रैलीक सहभागी लोकनि गन्तव्य दिश बढ़ैत ।

Rally's participants marching towards destination.



बसन्तपुरसं प्रज्ञा प्रतिष्ठान धरि रैली सहभागी सभ ।

Rally participants from Basantpur to Nepal Academy.



विभिन्न नारा सहित जुलुशक सहभागी सभ ।

Participants of the procession carrying different placards.



भाषा आन्दोलनक सक्रिय व्यक्तित्व लोकनि ।

Active personalities of the language movement.



उद्घाटन मंच पर सम्माननीय राष्ट्रपतिक संग संयोजक एवं अतिथि गण।

On the inaugural stage, the coordinator and guests with Honourable President.



मंचासीन व्यक्तित्व सभ।

Great personalities on the dais.



राष्ट्रपतिजीक संग कार्यक्रम सम्बन्धमे विचार विमर्श करैत संयोजक।

The coordinator consulting to President about the programme.



सम्मेलनक उद्घाटन करैत राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव ।

President Dr. Rambaran Yadav inaugurating the conference.



उद्घाटक हेतु दीप प्रज्ज्वलित करैत राष्ट्रपति डा. यादव ।

President Dr. Yadav lighting the lamp for inauguration.



आगत अतिथिक सम्मानमे स्वागत गान गबैत कलाकार रामा मंडल आ संगो सभ ।

Artist Rama Mandal and chorns singing welcome song in the honour of the guests.



स्वागत मन्तव्य दैत संयोजक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर' ।

Coordinator Rambharos Kapari 'Bhramar' giving welcome speech.



सम्मेलनक अवसर पर प्रकाशित स्मारिकाक विमोचन करैत प्रमुख अतिथि राष्ट्रपति डा. यादव ।

Chief Guest President Dr. Yadav releasing the published souvenir to mark the conference.



'भ्रमरक' सद्यः प्रकाशित नाटक संग्रह "भैया अएलै अपन सोराज"क विमोचन करैत प्रमुख अतिथि राष्ट्रपति डा. यादव ।

Chief Guest President Dr. Yadav releasing 'Bharmar's published collection of plays "Bhaiya ayelai apan soraj".



'मिथिला रत्न' सम्मानसं सम्मानित होइत प्रो.डा. योगेन्द्र प्र. यादव ।

Prof. Dr. Yogendra P. Yadava being honoured with 'Mithila Ratna' award by the President.



प्रमुख अतिथि डा. यादवक हाथसं सम्मान ग्रहण करैत डा. योगेन्द्र यादव ।

Prof. Dr. Yogendra P. Yadava receiving the honour from the Chief Guest Dr. Yadav.



'मिथिला रत्न' सम्मान ग्रहण करैत तारानन्द मिश्र ।

Taranand Mishra receiving the honour, 'Mithila Ratna'.



राष्ट्रपति डा. यादवसं सम्मानित होइत तारानन्द मिश्र ।

Taranand Mishra being honoured by President Dr. Yadav.



'मिथिलाश्री' सम्मान राष्ट्रपतिसं ग्रहण करैत सत्यमोहन जोशी ।

Satya Mohan Joshi receiving the honour 'Mithilashree' from the President.



डा. जगमान गुरुङ्ग सम्मान ग्रहण करैत ।

Dr. Jagaman Gurung receiving the honour from the President.



राष्ट्रपति डा. यादवक हाथें सम्मान ग्रहण करैत डा. सूर्यनाथ गोप।

Dr. Suryanath Gope receiving the honour from the President Dr. Yadav.



अवधी संस्कृतिविद्, अवधी संस्कृतिक अध्येता विश्वनाथ पाठक राष्ट्रपतिसं 'मिथिलाश्री' सम्मान ग्रहण करैत।

Awadhi cultural expert and scholar Bishwanath Pathak receiving the honour 'Mithilashree' from the President.



'मिथिलाश्री' सम्मान प्राप्त डा. नोबल किशोर राई।

Dr. Nobel Kishore Rai, a recipient of 'Mithilashree'.



‘मिथिलाश्री’ सम्मान राष्ट्रपतिसं ग्रहण करैत इतिहासविद् डा. प्रफुल्ल कुमार सिंह मौन।

Historian Dr. Praphulla Kumar Singh Maun receiving the honour 'Mithilashree' from the President.



अपन मन्तव्य दैत अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन, दिल्लीक महामंत्री डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजू।

Dr. Baidyanath Chaudhary Baiju, the General Secretary of International Maithili Conference, Delhi speaking on the occasion.



संस्कृति मंत्रीसं विचार-विमर्श करैत संयोजक भ्रमर।

Co-ordinator Bhramar talking to the Minister of Culture.



भारतीय अतिथि गणक संग संयोजक 'भ्रमर'।

The coordinator Bhramar along with Indian guests.



सम्मेलनके सम्बोधन करैत नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानक कुलपति बैरागी काइंला।

Bairagi Kainla, the Chancellor of Nepal Academy, addressing the conference.



महासचिव डा. बैजू राष्ट्रपतिक संग उल्लसित क्षणमे।

The General Secretary Dr. Baiju with the president in a pleasant mood.



मन्तव्य दैत संस्कृति मंत्री डा. मिनेन्द्र रिजाल।

Dr. Minendra Rijal, the Minister for Culture speaking on the occasion.



सम्मेलनके सम्बोधन करैत उप-प्रधानमंत्री विजय कुमार गच्छेदार।

Deputy Prime Minister Vijay Kumar Gachchhedar addressing to the conference.



राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव के पाग आ शालसं सम्मानित करैत संयोजक भ्रमर।

Co-ordinator Bhramar honouring the president Dr. Rambaran Yadav with pag (turban) and shal (shawl).



सम्मान ग्रहण करैत राष्ट्रपति डा. यादव।

President Dr. Yadav receiving the honour.



सम्बोधन करैत राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव।

President Dr. Rambaran Yadav addressing on the occasion.



सम्मेलनकें सम्बोधन करैत राष्ट्रपति।

President addressing the conference.



धन्यवाद ज्ञापन करैत कार्य सम्पादन समितिक सदस्य जीवछ मिश्र ।

Jibachha Mishra, the member of the working committee, giving a vote of thanks.



उद्घाटन सत्रक अन्तमे राष्ट्रपति डा. यादवक संग भारतीय प्रतिनिधि सभक सामूहिक चित्र ।

At the end of the inaugural session, the group photo of all the Indian representatives with President Dr. Yadav.



सहभागी विद्वत वर्ग ।

Scholar participants.



देश-विदेशसं आएल प्रतिनिधि लोकनि ।

Representatives from home and abroad.



भारतीय प्रतिनिधि मंडलक सदस्य/सहभागी लोकनि ।

Members/participants of Indian delegation team.



विचार गोष्ठीमे डा. योगेन्द्र प्र. यादव कार्यपत्र प्रस्तुत करैत ।

Prof. Dr. Yogendra P. Yadava presenting a working paper in the seminar.



कार्यपत्र पर टिप्पणी करैत साहित्यकार धर्मेन्द्र झा विह्वल ।

Writer Dharmendra Jha Bihwal commenting on the paper.



कार्यपत्र पर विमर्श होइत ।

A discussion on the working paper.



कार्यपत्र पर अपन विचार व्यक्त करैत सभासद् रामचन्द्र झा ।

Lawmaker Ram Chandra Jha expressing his views on the working paper.



विचार गोष्ठीक अध्यक्षता करैत भाषणकर्ता मैथिली अकादमी, पटनाक अध्यक्ष कमला कान्त झा।

Chairing the Seminar, speaker Kamala Kant Jha, Chairperson of Maithili Academy, Patna.



विचार गोष्ठीक सहभागी वक्ता लोकनि।

Participant speakers of the seminar.



विचार गोष्ठीक मंच पर कार्यपत्र सत्रक अध्यक्षता करैत कोलकाताक अशोकजी।

Ashokji from Kolkatta chairing the paper presentation session of the seminar.



विचार गोष्ठीमे मन्तव्य रखैत संयोजक “भ्रमर” ।

Co-ordinator Bhramar expressing his views in the seminar.



कवि गोष्ठीक अध्यक्षता करैत डा. पुष्पा ठाकुर मंच पर ।

Dr. Pushpa Thakur chairing the poets' seminar.



कविता वाचन करैत एक कवि ।

A poet reciting his poem.



कविता वाचनमे मग्न कवि ।

A poet lost in reciting a poem.



कवि गोष्ठीमे डा. अकेला ।

Dr. Akela in poets' seminar.



कवि गोष्ठीक मंच पर उपस्थित कवि लोकनिक संग संयोजक कालीकान्त झा 'तृषित' ।

Co-ordinator of poets' seminar, Kalikant Jha 'Trishit' with the poets on the dais.



समापन समारोहमे उपराष्ट्रपति परमानन्द झाकें स्वागत करैत "भ्रमर" ।

"Bhramar" receiving the Vice-President Parmanand Jha in the closing ceremony.



स्वागत मन्तव्य व्यक्त करैत सदस्य जीवछ मिश्र ।

Member Jibachha Mishra giving his welcome speech.



समापन समारोहमे अपन प्रतिवेदन पढ़ैत समालोचक चन्द्रेश ।

Critic Chandresh reading out his report in the closing session.



समापन समारोहमे डा. रामदयाल राकेशक कविता संग्रहक विमोचन करैत उपराष्ट्रपति झा।

In the closing session, Vice-President Jha releasing Dr. Ramdayal Rakesh's collection of poems.



समापन समारोहमे मन्तव्य दैत अकादमी अध्यक्ष कमलाकान्त झा।

Academy Chairperson Kamala Kant Jha expressing his views in the closing session.



उपराष्ट्रपतिक संग विमर्श करैत "भ्रमर"।

"Bhramar" consulting the Vice-President.



समापन समारोहक मंच पर वाम कातसं सभासद विमलेन्द्र निधि, संयोजक आ उपराष्ट्रपति झा।

On the dais during the closing ceremony (from the left), Lawmaker Bimalendra Nidhi, Coordinator, and Vice-President Jha.

मंच पर वामसं पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालयक तत्कालीन उपकुलपति डा. रामावतार यादव, सभासद निधि, संयोजक भ्रमर, उपराष्ट्रपति झा, भारतीय अतिथि डा. बैजु आ कमलाकान्त झा।

On the stage from the left, Dr. Ramawatar Yadav, the then Vice-Chancellor of Purbanchal Vishwavidyalaya, Lawmaker Nidhi, Coordinator Bhramar, Vice-President Jha, Indian guests Dr. Baiju and Kamala Kant Jha.





समापन समारोहमे विचार व्यक्त करैत भाषाविद् डा. योगेन्द्र प्र. यादव।

In the closing ceremony, linguist Prof. Dr. Yogendra P. Yadava expressing his views.



समापन समारोहमे अपन विचार रखैत पूर्वाञ्चल विश्वविद्यालयक तत्कालीन उपकुलपति डा. रामावतार यादव ।

In the closing ceremony, Dr. Ramavatar Yadav, the then Vice-Chancellor of Purbanchal Vishwavidyalaya, expressing his views.



समापन समारोहके सम्बोधन करैत सभासद विमलेन्द्र निधि ।

Lawmaker Bimalendra Nidhi addressing the closing ceremony.



उपराष्ट्रपतिकें पाग आ शालसं सम्मानित करैत संयोजक "भ्रमर" ।

Co-ordinator "Bhramar" honouring the Vice-President with pag and shawl.



मैथिली अकादमीक अध्यक्ष कमला कान्त झाकें सम्मानित करैत उपराष्ट्रपति ।

Vice-President honouring Kamala Kant Jha, the chairperson of Maithili Academy.



महासचिव डा. बैजुकें सम्मानित करैत उपराष्ट्रपति ।

Vice-President honouring the General Secretary Dr. Baiju.



मंच पर कोनो विशेष प्रसंगमे उल्लासपूर्ण वातावरण ।

On the stage, a pleasant environment in a special context.



समापन समारोहमे अपन विचार रखैत डा. वैद्यनाथ चौधरी बैजू ।

In the closing ceremony, Dr. Baidyanath Chaudhary Baiju expressing his views.



समापन समारोहक प्रमुख अतिथिक आसनसं सम्मेलनकें सम्बोधन करैत उपराष्ट्रपति परमानन्द झा ।

Chief Guest of the closing ceremony Vice-President Parmanand Jha addressing the conference.



पूर्वमंत्री एवं सभासद् रामचन्द्र झा सहभागी सभक माझ ।

Ram Chandra Jha, the ex-minister and the present lawmaker among the participants.



सम्मेलनक प्रबुद्ध श्रोता लोकनि ।

August gathering of the scholars in the conference.



सम्मेलनमे भारतीय प्रतिनिधि लोकनि अग्रपंक्तिमे ।

Indian representatives in the front row of the conference.



गोष्ठीमे महिला सभक सहभागिता ।

Women's participation in the seminar.



अध्यक्षीय पदसं धन्यवाद ज्ञापन करैत संयोजक रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'।

Chairperson and Co-ordinator Rambharos Kapari "Bhramar" giving a vote of thanks.



उपस्थित सहभागी सभकें सम्मेलनक यथार्थ रखैत संयोजक "भ्रमर"।

Co-ordinator "Bhramar" highlighting on the conference.



उपराष्ट्रपतिक संग भारतीय प्रतिनिधि लोकनि।

Indian delegates with the Vice-President.



सांस्कृतिक कार्यक्रममे गीत प्रस्तुत करैत कलाकार गायक रामामंडल।

Artist and singer Ramamandal singing a song in the cultural programme.



गायक हरिशंकर चौधरी अपन गायन प्रस्तुत करैत।

Singer Hari Shankar Chaudhary singing his song.



मिथिलाञ्चक प्रसिद्ध नृत्यांगना डा. नलिनी चौधरीक नृत्यनुप्रा।

Renowned dancer of Mithila zone, Dr. Nalini Chaudhary in dancing position (gesture & posture).



नृत्यमे समर्पित डा. नलिनी चौधरी।

Dr. Nalini Chaudhary dedicated to dance.



मैथिली लोकनाट्य जट-जटिनके प्रस्तुत करैत रामानन्द युवा क्लबक कलाकार लोकनि।

Artists of Ramanand Youth Club performing the maithili folk-drama Jat-Jatin.



जट-जटिनक कलाकार सभक प्रस्तुति।

The presentation of the Jat-Jatin artists.



जट-जटिन लोकनृत्यक एकटा भावपूर्ण प्रसंग ।

A sentimental/emotional context of the folk-dance/drama Jat-Jatin.



जट-जटिनक एकटा नृत्य ।

A scene of folk-dance Jat-Jatin.



चर्चित गायिका रश्मि रानीक गायन ।

The song from the popular singer Rasmi Rani.



जट-जटिनक रोचक क्षण ।

An interesting moment of Jat-Jatin.



जट-जटिन लोक नाट्यमे नट आ नटिन ।

Nat and Natin in the folk-drama Jat-Jatin.



सांस्कृतिक कार्यक्रमक विशिष्ट श्रोता लोकनि ।

Special audience of the cultural programme.



लोकनाट्य डोमकच्छक एकटा दृश्य – प्रस्तुति मिनाप, जनकपुर

A scene of Domkachchha folk-drama presented by MINAP, Janakpur.



सांस्कृतिक कार्यक्रममे गीत प्रस्तुत करैत रंजना झा।

Ranjana Jha singing a song in the cultural programme.



भावपूर्ण गीत प्रस्तुतिमे गायिका रंजना झा।

Singer Ranjana Jha presenting a sentimental song.



सांस्कृतिक कार्यक्रमक विशिष्ट श्रोता-उपराष्ट्रपति परमानन्द झा।

Vice-President Parmanand Jha - a special audience- of the cultural programme.



सांस्कृतिक कार्यक्रममे भारतीय कलाकार लोकनिक प्रस्तुति।

The performance of the Indian artists in the cultural show.



सांस्कृतिक कार्यक्रमक अन्तिम सहभागी लोकनि।

Last participants of cultural programme.

गणतन्त्र नेपालको समावेशी राष्ट्रिय दैनिक

गोरखापत्र

GORKHAPATRA DAILY, December 23, 2010

विशेष अधि...

असफल...

राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव बुधबार अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनको राजधानीमा उद्घाटन गर्नुहुँदै। तस्बिर : भीम गुरुङ/गोरखापत्र

भाषा, संस्कृतिको संरक्षण अनिवार्य

गोरखापत्र समाचारदाता

काठमाडौं, पुस ७ गते। राष्ट्रपति डा. रामवरण यादवले मुलुकका सबै भाषा, संस्कृतिको संरक्षण र प्रवर्द्धन नभएसम्म मुलुकको समग्र विकास हुन नसक्ने बताउनुभएको छ।

मानिसको स्वाभिमान र व्यक्तित्व विकासका लागि उसको भेषभूषा र रहनसहनसमेत मातृभाषाको विकास ... राष्ट्रपति डा. यादवले भाषिक र सांस्कृति दृष्टिले विश्वमा नै अद्भूत एवं सम्पन्न मुलुक हो भन्नुभयो।

मैथिली भाषालाई एउटा समृद्ध भाषाको सङ्ज्ञा दिँदै उहाँले नेपालको कला, संस्कृतिको विकासमा मैथिली कला-संस्कृतिको विशिष्ट योगदान रहेको स्पष्ट गर्नुभयो।

२१औँ शताब्दिको परिवर्तनको प्रभावलाई आत्सात् गर्दै मैथिली भाषा साहित्यका विद्वान्हरू महाकवि विद्यापति, लोकदेवता दिनाभदरी, दुर्गा-दयाल र सहलेसजस्ताको विचारलाई मनन् गर्न ...

लोकार्पण गर्दै राष्ट्रपतिले सम्मेलन हुने भाषिक विचार गोष्ठी र पुस्तक प्रकाशनले मैथिली भाषाको विकासमा सहयोग पुग्ने विश्वास व्यक्त गर्नुभयो।

कार्यक्रममा उपप्रधानमन्त्री विज... गच्छदारले मुलुकको आधा जनसङ्... भएको मधेसको भाषिक र सांस्... विविधता उन्नत रहेको बताउँदै ... मुलुककै समृद्ध र प्राचीन भ... भन्नुभयो।

अहिलेको संविधानम...

RAJDHANI
Tuesday, 4 January 2011

विचार

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनका तीता-मीठा

■ रामभरोस कापडि 'भ्रमर'

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनले मातृभाषा-भाषीहरूलाई एक मञ्चमा ल्याउने प्रयास गरेको छ। नेपालमा आफ्नो मातृभाषालाई समृद्ध हेर्न चाहने इच्छालाई बलशाली रुपमा अगाडि सारेर त्यसको उचित संरक्षण सम्वर्धनको वातावरण बनाउने काम पनि यो सम्मेलनले गरेको छ। आगामी दिनमा यसका उपलब्धिहरू अवश्य पनि देखिने आशा गर्न सकिन्छ।

जब म २०६५ साल पुस २ गते साझा प्रकाशनको हैसियतले कार्यभार सम्हालें, मनमा एउटा त्रास थियो। साझा प्रकाशनको स्थापनाको विगत पाँच दशकमा उपत्यका बाहिरबाट आएको म पहिलो अध्यक्ष थिएँ। म मैथिली भाषा, साहित्यमा काम गर्ने साहित्यकार तर साझा प्रकाशनमा नेपालीबाहेक अन्य भाषाको 'गुन्जायस' नहुने ठाउँ। अर्कोतिर म जुन मन्त्रालयको सिफरिसमा त्यहाँ पुगेको थिएँ, त्यहाँका कर्मचारी, निर्वाचित बोर्ड सदस्यहरूको मनमा मेरो प्रति पूर्वधारणा पनि बनेकै थियो। तर, त्यहाँ म बसेको लगभग साढे १२ महिनाभित्र कर्मचारी र बोर्ड सदस्यहरूलाई आफ्नो पूर्वधारणा फेर्न बाध्य बनाएको थिएँ र सबै पक्षबाट निकै प्रेम, स्नेह पाएँ।

यसले मलाई एउटा हौसला प्रदान गऱ्यो। आफ्नो मनमा दृढ निश्चय छ भने जेसुकै काम पनि गर्न सकिन्छ। र, त्यसैबेला काठमाडौंमा अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन गर्ने हिम्मत जुटाएँ। भारतको तीरुपतिमा गत वर्ष भएको एउटा कार्यक्रममा भाग लिइरहँदा त्यही मञ्चबाट मैले घोषणा गरेको थिएँ- अगामी वर्ष २२, २३ डिसेम्बर २०१० मा काठमाडौंमा अन्तर्राष्ट्रिय ...

त्यसभन्दा पूर्व वसन्तपुरबाट निकालिएको भाषा सम्मान जुलुस पनि त्यत्तिकै आकर्षक भएको थियो।

अर्को दिन विसर्जन समारोहमा उपराष्ट्रपति परमानन्द झा आउनु भयो र आयोजकहरूलाई हौसला 'बुलन्द' गर्दै भन्नुभयो- नेपालमा यो पहिलो समारोह भएको छ, जसको उद्घाटन राष्ट्रपतिज्यूबाट र समापन उपराष्ट्रपतिबाट भएको छ।

सम्मेलनका विशिष्ट पक्ष

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनमा सम्मान कार्यक्रम पनि सम्पन्न गरिएको थियो। त्यसमा मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृति र कलाको क्षेत्रमा विशिष्ट योगदान गर्ने दुईजना साधकलाई 'मिथिलारत्न' सम्मान त दिइयो नै, नेपालका अन्य भाषामा विशिष्ट प्रतिभालाई पनि 'मिथिलाश्री' सम्मानबाट सम्मानित गरिएको थियो। सत्यमोहन जोशी, डा. जगमान गुरुङ, डा. नोबलकिशोर राई, विश्वनाथ पाठक, डा. सूर्यनाथ गोप आदि। यसले सहअस्तित्व र समन्वयको सन्देश दिएको मान्नु पर्दछ।

सम्मेलनमा भारतका विभिन्न भागबाट लगभग ७०-८० जना प्रतिनिधि सामेल भएका थिए। सबै मिलाएर डेढ सयभन्दा बढी सहभागीहरूबीच विचार गोष्ठीलगायत अन्य सन्दर्भमा भएको कुराकानी, छलफल, विचार विमर्शले नेपाल-भारतका मैथिली भाषी क्षेत्रका भाषीय समस्याबारे गहनतम् निष्कर्षहरू निस्केका थिए, जो पछि 'काठमाडौं घोषणापत्र'को माध्यमबाट बाहिर आयो।

काठमाडौं घोषणापत्र १७ बुँदे रहेको र त्यसमा मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृति र कलाको समुचित विकासका लागि सरकारसँग माग गरिएको छ। अगामी संविधानमा मैथिलीको उचित स्थान दिनुका साथै नेपाल-भारतलगायत विश्वका अन्य भागमा बस्ने आठ करोड मैथिली भाषीहरूको पहिचानलाई स्थापित गर्नुपर्ने, अगामी संविधानमा भाषा सूचीकृत गर्नुपर्ने, लोकसेवा आयोगमा मैथिलीको मान्यता दिनुपर्ने, शिक्षामा मैथिली भाषाको व्यवस्थापन गर्नुपर्ने, नेपालमा ...

सम्पन्न भएको थियो। जनकपुरका रामानन्द युवा क्लबद्वारा लोकनाटच जट-जटिनको विमुग्धकारी प्रदर्शन गरिएको थियो भने दोस्रो दिन जनकपुरकै मिनापले डोमकछ लोकनाटच प्रस्तुत गरेका थिए। नेपाल-भारतका विशिष्ट गायकहरूको स्वर एउटै मञ्चमा सुन्नेहरू दंग थिए। भारतका कुञ्जबिहारी मिश्र, रञ्जना झा, नेपालका रामा मण्डल, रश्मी रानी कार्यक्रमका आकर्षण थिए। काठमाडौंमा विपरीत परिस्थिति, राजनीतिक तरलता, आर्थिक सहयोगको खराब अवस्था छँदाछँदै दुवै दिनको कार्यक्रम पूर्वनिर्धारित अनुसार नै सफलतापूर्वक सम्पन्न हुन आयोजक वर्गको निम्ति राहतकै क्षण मान्नु पर्दछ।

तीता प्रसंग

यत्रो ठूलो अपेक्षा राखेर गरिएको यो सम्मेलन विना विघ्नबाधा सम्पन्न भयो, यो प्रशन्नताको विषय हुन सक्छ। तर, एउटा संयोजकको हैसियतले भोगेका अनेकौं यस्ता क्षणहरू छन्, तिनको वर्णन गर्नु उचित पनि हुन सक्दैन। त्यसले पीडा मात्र दिन सक्छ। हो, दुइटा कुराको खुलासा गर्नैपर्छ। पहिलो केही व्यक्तिले एउटा पूर्वनियोजित हल्ला फिँजाए- यो सम्मेलनले मधेस आन्दोलनलाई कमजोर गर्न सक्छ। वास्तवमा यो भाषा, साहित्य, संस्कृति र कलाको विकासका निम्ति जनजागरण अभियान थियो, कुनै राजनीतिक उद्देश्यबाट प्रेरित भई सञ्चालन गरिएको कार्यक्रम होइन। यसलाई अन्तसम्म विशुद्ध सांस्कृतिक चिन्तनको थलो राख्ने प्रयास गरिएको थियो। आयोजनमा मधेस आन्दोलनका सक्रिय व्यक्तित्व नै लागेका थिए तर ती सबै मात्र मैथिली भाषाप्रतिको समर्पणसाथ। अन्यथा सोच्नेहरू गलत प्रमाणित भइसकेका छन्।

दोस्रो, सम्मेलनलाई सुनियोजित रूपमा कमजोर पार्न, विवादित बनाउन अनेकौं प्रयासहरू गरिए। आमन्त्रण कार्डहरू सम्बन्धित व्यक्तिसम्म पुग्न सकेन। व्यक्तिगत रोष, द्वैषहरू पनि देखियो। आयोजनका क्रममा यस्ता प्रसंगहरू आउँदै गए, हामी सबैलाई सहज रूपमा स्वीकार गर्दै आयोजन ...

POST PHOTO: SHRUTI SHRESTHA

IN HONOUR OF MOTHER TONGUE | *Participants from Bihar state of India attend the inaugural of International Maithili Conference at Nepal Academy in Kathmandu on Wednesday.*

International Maithili Conference kicks off

POST REPORT
KATHMANDU, DEC. 22

INTERNATIONAL Maithili Conference kicked off in the Capital on Wednesday with an aim to promote Maithili language.

Inaugurating the two-day conference underway at Nepal Academy Hall, President Ram Baran Yadav said that Maithili has been a popular language since the reign of King Janak of Mithila State and it is not only a language of the Tarai people, but the second most spoken language of the country. "Nepal is small in size, but rich in language and culture," Yadav said. "Maithili has also served as a bridge to maintain cordial relations with neighbouring India."

In the programme, Deputy Prime Minister Bijaya Kumar Gachhadar, Culture Minister Minendra Rijal and Chancellor of Nepal Academy Bairagi Kainla shed lights on the importance of Maithili language. They even described Maithili as an ancient and rich language in terms of literature and culture. The conference will conclude on Thursday.

सबै भाषा र संस्कृतिको जगेर्ना गर्नुपर्छ : राष्ट्रपति यादव

मधेशवाणी

The Voice of Madhesh

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन सम्पन्न

काठमाडौं घोषणापत्र जारी

फोरम लोक… मधेश क्र…

काठमांडू

अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन

अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली सम्मेलन का दो दिवसीय आयोजन काठमाण्डू में भव्यतापूर्वक मनाया गया। इस कार्यक्रम के पहले दिन मिथिला पहिरन के साथ बसन्तपुर से मिथिला जागरण रैली शुरु होकर प्रज्ञा प्रतिष्ठान में सम्पन्न हुआ।

इस कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में प्रमुख अतिथि राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव जी थे। इस कार्यक्रम मे उपप्रधानमन्त्री विजय कुमार … मन्त्री मिनेन्द्र रिजाल, तराई … पार्टी के अध्यक्ष महन्थ … अधिकार फोरम (नेपाल) के … प्रज्ञा प्रतिष्ठान के कुलपति … ता थी। प्रज्ञा प्रतिष्ठान … मुख राम भरोस कापडि … संयोजक थे। उन्होंने … में मैथिली भाषा के … संस्कृति का संरक्षण … स्वयं रामभरोस कापडि ने किया था। और मैथिली भाषा और संस्कृति के विकास में अपनी विशिष्ट योगदान के लिए पाँच व्यक्तियों को मिथिला रत्न से सम्मानित भी किया गया। फिर भारत और नेपाल से आये विभिन्न कलाकारों के द्वारा रंगारंग साँस्कृतिक कार्यक्रम किया गया जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया।

दूसरे दिन सत्रह सूत्रीय काठमाण्डू घोषणापत्र जारी किया गया। जिसमें संविधान में मिथिला संघीय राज्य की व्यवस्था देश के दूसरे भाषा के रुप में मैथिली भाषा को सरकारी कामकाज के रुप में प्रयोग के मान्यता देने, संविधान में मैथिली भाषा को सम्मानजनक स्था… देने, स्कूल से ले… कॉलेज तक मै… भाषा में पठन-… हो तथा विद्याप… राष्ट्रीय विभूति… किये जाने समेत १७ सूत्रीय घोष… उल्लेख था। सम्मेलन में जारी … घोषणा पत्र सम्मेलन मूल आयो… का सदस्य एवं नेपाल पत्रकार … केन्द्रीय अध्यक्ष धर्मेन्द्र झा ने प… दूसरे दिन कार्यपत्र भी प्रस्तुत … भाषाविद् डा. योगेन्द्र प्रसाद … गया तथा इस कार्यपत्र प… महासंघ के अध्यक्ष धर्मेन्द्र…

थी। सम्मेलन में पुष्पा ठाकुर की अध्यक्षता में कवि गोष्ठी का भी आयोजन किया गया था जि… और नेपाल के ३०-३५ कवियों … प्रस्तुत की।

हिमालिनी/जन…

राजधानी

मैथिली मुलुककै दोस्रो ठूलो भाषा : राष्ट्रपति

तस्बिर : राजधानी

रासस
काठमाडौं, ७ पुस

राष्ट्रपति डा. रामवरण यादवले बुधबार राजधानीमा अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनको उद्घाटन गर्दै मिथिलाका नरेश जनकको पालादेखि नै बोलीचालीमा प्रचलित मैथिली भाषा मुलुककै दोस्रो ठूलो भाषा भएको बताएका छन्।

उनले विद्यमान मानचित्रमा नेपाल 'सानो भए पनि भाषा, संस्कृतिमा धनी रहेको बताउँदै भारतसँग सुमधुर सम्बन्ध राख्न मैथिली भाषा सेतुको रूपमा रहेको धारणा राखे। 'नेपाल बहुभाषा, बहुजातिका रूपमा रहेको छ,' उनले भने, 'सबै जातजाति तथा भाषाभाषीको मातृभाषा एवं संस्कृति जगेर्ना गर्नसके समुन्नत देश बन्नेछ।'

उनले मैथिली भाषा विकासमा योगदान पुर्‍याएका विद्यापति, जयवर्धनप्रति आभार प्रकट गरे। सम्मेलनले मैथिलीभाषा विकासमा सहयोग पुर्‍याउने आशा लिँदै उनले सफलताका लागि शुभकामना पनि दिए।

भौतिक योजना तथा निर्माणमन्त्री विजयकुमार गच्छदारले राजधानीमा मल्लकालदेखि नै मैथिलीभाषा प्रवेश भइसकेको उल्लेख गरे।

त्यस्तै, संविधानसभा, संघीय मामिला, संसदीय व्यवस्था तथा संस्कृतिमन्त्री डा. मीनेन्द्र रिजालले अढाइ सय वर्षदेखि तराई तथा काठमाडौंमा प्रचलनमा आएको मैथिली पुरानो भाषा भएको जिकिर गरे।

उनले मुलुक अत्यन्त विशिष्ट परिस्थितिमा रहेको बेला संविधान बनाउने जिम्मेवारी सबैको भएकोमा जोड दिए। 'राष्ट्रियगानमा एउटै माला भनेझैं संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रको एउटै माला गाँस्ने कार्यका लागि सम्मेलन सहयोगीसिद्ध हुने विश्वास गर्न सकिन्छ,' उनको कथन थियो।

कार्यक्रममा नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठानका कुलपति बैरागी काइँलाले पहिलो पटक प्रज्ञा प्रतिष्ठानको सहभागितामा सम्मेलन आयोजना गरिएको जनाए। उनले साहित्य, संस्कृतिका हिसाबले मैथिली प्राचीन र समृद्ध भाषा भएको उल्लेख गरे।

सम्मेलनमा भारतीय प्रतिनिधि डा. वैद्यनाथ चौधरीले मैथिली भाषा नेपाल र भारतबीचको मित्रता प्रतीकको रूपमा रहेको बताए।

आयोजकका तर्फबाट सम्मेलन संयोजक डा. रामभरोस कापडीले स्वागत गरे। त्यस्तै, राष्ट्रपति यादवले भाषाशास्त्री डा. योगेन्द्रप्रसाद यादव र पुरातत्वविद् तारानन्द मिश्रलाई 'मिथिलारत्न'बाट सम्मान गर्नुका साथै डा. प्रफुल्लकुमार सिंह, सत्यमोहन जोशी, जगमान गुरुङ, डा. नोवलकिशोर राईलगायतलाई मिथिलाश्री उपाधिबाट सम्मान गरेका थिए।

सम्मेलन उद्घाटनअघि वसन्तपुरबाट बिहान ११ बजे प्रभातफेरी आयोजना गरिएको थियो। नेपालका विभिन्न स्थानलगायत विभिन्न मुलुकबाट समेत मैथिली साहित्यकार, भाषाशास्त्री, भाषा आन्दोलनमा लागेका व्यक्तित्व उपस्थित थिए।

नेपालका भाषाभाषीबीच सुमधुर सम्बन्ध कायम गर्ने, राष्ट्रभाषा नेपालीको सम्मान र रक्षा गर्दै मातृभाषा विकासमा जोड दिने उद्देश्य राखिएको सम्मेलन दुई दिनसम्म चल्नेछ।

दोस्रो दिन कार्यक्रमको … मातृभाषासम्बन्धी विचार तथा कविगोष्ठी … साँझ उपराष्ट्रपतिको उपस्थितिमा सम्मेलन समापन हुनेछ।

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन सुरु

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनका सहभागी।

तस्बिर : श्रुति श्रेष्ठ/कान्तिपुर

अतुल मिश्र

यो नेपालीपछि सबैभन्दा बढी बोलिने भाषा हो

(सम्पादकीय, अन्नपूर्ण पोष्ट)

मैथिली उत्सव

सबैको उन्नति अपरिहार्य छ

यसै साता राजधानीमा सम्पन्न अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलनका सन्देश नबिर्सने किसिमका छन्। दुई दिनसम्म चलेको सम्मेलनले सत्रबुँदे काठमाडौं घोषणापत्र जारी गरेको छ, जसमा मुलुकको वर्तमान र भविष्यका निम्ति मूल्यवान् दिशानिर्देश छन्। घोषणापत्रले अघि सारेका केही बुँदा राज्य र समाजको अग्रगमनका निम्ति अत्यावश्यक छन्। संविधानमा मिथिला संघीय राज्य व्यवस्था हुनुपर्ने, मैथिली भाषालाई पनि सरकारी कामकाजको भाषा बनाउनुपर्ने, विद्यालयदेखि विश्वविद्यालयसम्म मैथिली भाषामा पठनपाठन गर्ने व्यवस्था हुनुपर्ने, महाकवि विद्यापतिलाई राष्ट्रिय विभूति घोषणा गर्नुपर्नेलगायतका मागलाई यही परिप्रेक्ष्यमा लिनुपर्छ। सम्मेलनको अर्को महत्त्वपूर्ण पक्ष हो– भाषा, विज्ञान र संस्कृति संरक्षणका सन्दर्भमा प्राज्ञद्वय डा. योगेन्द्रप्रसाद यादव तथा ताराकान्त मिश्रले प्रस्तुत गरेका कार्यपत्र र तिनको निष्कर्ष। सम्मेलनमा मैथिली क्षेत्रका स्रष्टा, राजनीतिक व्यक्तित्व तथा समाजसेवीको उपस्थिति हुनु यसको अर्को सफलता थियो भने मैथिली एकेडेमी पटना (भारत) का अध्यक्ष कमलाकान्त झा, भाषाविज्ञ डा. वैजनाथ चौधरीलगायतको उपस्थितिले यसको गरिमामा श्रीवृद्धि भएको छ।

हाम्रो मुलुक बहुभाषिक भए पनि यस्ता सम्मेलन हुन थालेको चाहिँ धेरै भएको छैन। नेपालको राजनीतिक इतिहासको एउटा कालखण्ड एक भाषा नीतिले आक्रान्त भएको बेला अरू धेरै राष्ट्रिय भाषाको संवर्द्धन र विकास अवरुद्ध हुन गयो। नेपाली भाषालाई सरकारले आफ्नो एकमात्र कामकाजी भाषाको स्तरमा कार्यान्वयन गर्ने नीति लिँदा अरू भाषाको जीवनचक्र अवरुद्ध हुन पुगे। विशेषगरी विविध भाषाभाषी, धर्मावलम्बी तथा सांस्कृतिक धारा एवं प्रवाहमाथि अंकुश लगाउँदा त्यसबाट सिंगो मुलुकको एकतामा समेत अप्ठ्यारो पर्यावरण निर्माण भयो। त्यसबखत जे कुरालाई राष्ट्र र राष्ट्रिय एकताको सूत्र भनियो त्यसले वास्तविक अर्थमा संकीर्ण तथा एकपक्षीय तानाशाहीलाई स्थापित गर्‍यो। भन्न त मुलुकलाई चार वर्ण छत्तीस जातको साझा फूलबारी भनियो तर त्यस्तो फूलबारीमा एउटा फूलको महत्त्वका निम्ति अरू फूलहरूको मानमर्दन र अवमूल्यन भयो। विसं २०४६ को जनआन्दोलनपछि मात्र राष्ट्रियताको वास्तविक परिभाषाबारे बहस, छलफल र विमर्श हुन थाले। त्यसपछि मात्र भाषा, धर्म र संस्कृतिमा निहित बहुलताको यथार्थबारे नयाँ दृष्टिकोण बन्न थाले। दोस्रो जनआन्दोलनपछि यो माग,आवाज र अडान झन फराकिलो र बलियो हुँदै गयो।

> एकले अर्कालाई सम्मान गर्ने र आफ्नो असल परम्परा र प्रगतिशील मौलिकता अंगीकार गर्ने सहयात्राको पर्याय नै साँचो राष्ट्रियता हो।

दुई दशकयता मुलुकभित्रका राष्ट्रिय भाषाको उन्नतिमा सकारात्मक कार्यहरू निकै भए। प्रज्ञा प्रतिष्ठान, नेपाल टेलिभिजन, रेडियो नेपाल सांस्कृतिक संस्थान, साझा प्रकाशन आदिमा मुलुकका अरू भाषालाई ठाउँ दिने नीति स्थापित भएको छ तर अहिलेसम्म जेजति हुन सकेको छ, पर्याप्त छैन। विशेषगरी लेखन, प्रसारण, अनुसन्धान, प्रकाशन आदि नेपाली सँगसँगै अरू राष्ट्रिय भाषाको विकासले अपेक्षाकृत महत्त्व सकेको छैन। खासगरी सरकारी कामकाजमा अन्य राष्ट्रभाषाको प्रयोग राज्यको अग्रगामिता प्रकट भएको छैन। राष्ट्रिय एकता र त्यसको वि... निम्ति यस्तो विषय महत्त्वपूर्ण बन्न जान्छ। एकताको अर्थ ... थिच्नु कदापि होइन। राज्यशक्तिको ... परिभाषा भन्न ...

अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन सम्पन्न

काठमाडौं, पुस १०गते। मिथिला, मैथिल र मैथिलीको वर्तमान समस्याका विभिन्न पक्षमाथि बृहत्तर विचारविमर्श गर्दै अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन २०६७ सम्पन्न भएको छ। सम्मेलन समापनका अवसरमा १७ बुँदे काठमाडौं घोषणापत्रसमेत जारी गरिएको छ।

घोषणापत्रमा नेपालको आगामी सङ्घीय संविधानमा मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृतिको उचित संरक्षण, संवर्द्धनका लागि ... गर्नुपर्ने, नेपाल, भार... देशमा आठ करोड... रहेका मैथिली भा... गर्न प्रयास गर्नु... साहित्य, संस्... संरक्षणका ल... बनाउनुपर्ने उ...

त्यस्तै नेपालको भावी संविधानमा मैथिली भाषालाई सम्मानजनक स्थान दिनुका साथै भाषाहरूलाई सूचीकृत गर्न र लोकसेवा आयोगमा मान्यता प्रदान गर्न आग्रह गर्दै घोषणापत्रमा शिक्षामा मैथिली भाषाको व्यवस्थापन गर्नुपर्ने, नेपालमा मैथिली बढी बोलिने दोस्रो भाषा भएकाले सरकारी कामकाजको भाषाको रूपमा मैथिलीको प्रयोगको व्यवस्था गर्नुपर्ने तथा नेपाल र भारतमा छरिएका मैथिल संस्कृतिसँग आबद्ध पुरातात्त्विक महत्त्वका सामग्री र स्थानको ... अन्वेषण गर्नुपर्ने

यसमा तीव्रता ल्याउनुपर्ने घोषणापत्रमा उल्लेख छ।

महाकवि विद्यापतिद्वारा १२ वर्ष बिताइएको ठाउँ बनौलीस्थित विद्यापति गढको संरक्षण, संवर्द्धन गर्न नेपाल सरकारसँग माग गर्दै सिमरौनगढको संरक्षण र मिथिलानगरको प्रामाणिक खोज तथा संरक्षण गर्न माग गर्दै घोषणापत्रमा महाकवि विद्यापतिलाई राष्ट्रिय विभूति घोषित गर्न र कार्तिक धवल त्रयोदशी तिथिलाई राष्ट्रियपर्वको रूपमा मान्यता दिई सार्वजनिक बिदा दिन आग्रह गरिएको छ।

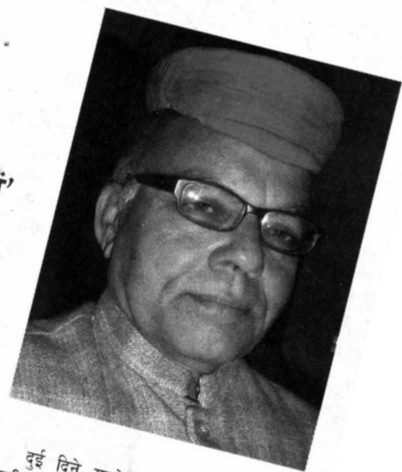
सो सम्मेलनमा स्वदेश र ...मैथिली र मैथिलीसँग आबद्ध ... प्रतिनिधिको ...जक रामभरोस ...ो गर्नुभएको ...। रासस

हिमाल खबरपत्रिका

पाँच प्रश्न

'मैथिली भाषा–साहित्यको महत्त्व बुझाउन सफल भयौं'

७ र ८ पुसमा राजधानीमा सम्पन्न सातौं अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन आयोजक समितिका संयोजक रामभरोस कापडी 'भ्रमर' मिथिलाञ्चलका नेतालाई दबाब दिन र मैथिली युवा पुस्तालाई सचेत गराउन सफल भएको बताउँछन्।



यस पटकको अन्तर्राष्ट्रिय मैथिली सम्मेलन कस्तो रह्यो ?

सम्मेलनबाट मैथिली भाषा, साहित्य, कला-संस्कृति कति समृद्ध छ भन्ने सन्देश दिन सफल भयौं। मिथिलाञ्चलका युवाहरूलाई आफ्नै भाषा र संस्कृतिबारे बुझाउने काम पनि सम्मेलनले गर्‍यो।

अन्य भाषा–साहित्यको प्रभावले मैथिली भाषा–साहित्य टाक्सिँदै गएको हो ?

अवश्य हो। तेह्रौं शताब्दीमा मैथिली भाषामा लेखिएको 'वर्णरत्नाकर' ग्रन्थबाट यो भाषा कति पुरानो रहेछ भन्ने थाहा हुन्छ। मध्यकालसम्म राष्ट्र भाषाको रूपमा ... मैथिलीलाई दुई/तीन सय ... अति कमजोर पारियो ... 'एक भाषा ...

दुई दिने सम्मेलनले १७ बुँदे घोषणापत्र जारी गरेको छ। महाकवि विद्यापति ट्रस्टका लागि सरकारले रु.१ करोड दिने घोषणा भइसकेर पनि अगाडि बढ्न नसकेको काम शुरु हुनुलाई तत्कालको उपलब्धि मान्न सकिन्छ। संस्कृतिमन्त्री सम्मेलनमा आइदिँदा यो काम सहज भएजस्तो लाग्छ।

मैथिली सम्मेलन ...

मैथिली ... मिथिलाञ्चल... राजधानी भ... ...उने कुरा ...

Maithili conference in Kathmandu

Nepal News.Net

Tuesday 21st December, 2010 (Source: The Himalayan Times)

HIMALAYAN NEWS SERVICE KATHMANDU: With the aim of promoting and extending the recognition of Maithili language, a group of intellectual Maithili speaking community is organising a two-day International Maithili Conference -2067 in Kathmandu from December 22 to 23 .

"The conference is the first of its kind," said Rambharosh Kapadi, a member of Nepal Academy and co-coordinator of the conference committee.

Author and former member of the academy, Dr Ram Dayal Rakesh informed that the conference was to commemorate the day Maithili language was listed in the eighth annex of the Indian constitution.

"It is a well-developed language with its own literature, but needs efforts for further development," said Rakesh.

Maithili is the second largest language in Nepal, with ...

Read the full story at **The Himalayan Times**

President inaugurates Maithili conference

Image

President Ram Baran Yadav (File photo)

President Dr Ram Baran Yadav inaugurated the International Maithili Conference held at the Nepal Academy Hall Wednesday.

Addressing the two-day conference being held to promote Maithili language, President Dr Yadav said Mathili language has a long history as it has been in use since the reign of King Janak of Mithila.

He said Maithili should not be considered as a popular language used by the Terai people only, but one of the major languages of the country.

"Nepal is small in size, but rich in language and culture," Yadav said. "Maithili has also served as a bridge to maintain cordial relations with neighboring India."

Also present in the programme were Deputy Prime Minister Bijaya Kumar Gachhadar, Culture Minister Minendra Rijal and Chancellor of Nepal Academy Bairagi Kainla. They shed lights on the importance of Maithali Language and described it as an ancient and rich language in terms of literature and culture. *nepalnews.com*

NEPALHORIZONS.com

Nepal Poush 18 2067

Search NHC | Search | नेपाली फन्ट डाउनलोड

Menu: Home · Blogs · Classifieds · Events · Forum · Greeting Cards · Matrimonials · NHC Mailing List · Photo Gallery · White Pages · Yellow Pages

Top Headline News

Maithilis to Demand Seperate Maithili State

NepalHorizons Reporter

The international Maithili convention is set to be held in Kathmandu in the coming Chaitra 29 and 30 to assist the demand of a seperate Mithila state in Nepal too while the demand for the seperate Mithila state is also being raised in Bihar of India for some time back.

The international Maithili council has informed about the issue by doing a press conference in Kathmandu on Thursday.

The organizers have said that while all other ethnic and lingual groups in Nepal have been raising their voices for their rights and opportunities the Maithili community is also set to do so.

The organizers have believed that such kind of convention would provide the support in the development of Maithili langauge, literature and culture.

THE HIMALAYAN TIMES 2010 — The Himalayan Times

Top Stories: Australian residents evacuate as floodwaters near · Police sent in to quell prison riot

Maithili conference in Kathmandu

Added At: 2010-12-22 8:12 AM Last Updated At: 2010-12-22 8:12 AM

THT Online/ File Photo

Organisers of International Maithili Conference at a press meet in the Department of Information in Kathmandu on Tuesday.

HIMALAYAN NEWS SERVICE

KATHMANDU: With the aim of promoting and extending the recognition of Maithili language, a group of intellectual Maithili speaking community is organising a two-day International Maithili Conference -2067 in Kathmandu from December 22 to 23.

"The conference is the first of its kind," said Rambharosh Kapadi, a member of Nepal Academy and co-coordinator of the conference committee.

Author and former member of the academy, Dr Ram Dayal Rakesh informed that the conference was to commemorate the day Maithili language was listed in the eighth annex of the Indian constitution.

"It is a well-developed language with its own literature, but needs efforts for further development," said Rakesh.

Maithili is the second largest language in Nepal, with around six million native speakers. According to a press conference, Maithili ranks 26th in the list of frequently spoken languages of the world, with over four crore speakers the world over.

The conference management committee is organising a rally of Maithili language speakers on December 22, which President Dr Ram Baran Yadav will inaugurate.

The committee also informed it will confer eight different personalities, who have contributed to preservation and development of the ... with the title "Mithilashree" and " Mithilaratna".

...ber management committee under the coordination of academician Rambharosh Kapadi has been formed. A total of 200 ...eaking intellectuals, poets and littérateurs from India and Nepal are expected to take part in the conference.

Maithilis conference in capital

12/22/2010 12:00:00 AM

A group of intellectual Maithili-speaking community organises a two-day International Maithili Conference -2067 in Kathmandu to promote and extend the recognition of the Maithili language.

KATHMANDU: "The conference is the first of its kind," said Rambharosh Kapadi, a member of Nepal Academy and co-coordinator of the conference committee.

Author and former member of the academy, Dr Ram Dayal Rakesh informed that the conference was to commemorate the day Maithili language was listed in the eighth annex of the Indian constitution.

"It is a well-developed language with its own literature, but needs efforts for further development," said Rakesh.

Maithili is the second largest language in Nepal, with around six million native speakers. According to a press conference, Maithili ranks 26th in the list of

frequently spoken languages of the world, with over four crore speakers the world over.

The conference management committee is organising a rally of Maithili language speakers on December 22, which President Dr Ram Baran Yadav will inaugurate.

The committee also informed it will confer eight different personalities, who have contributed to preservation and development of the language, with the title "Mithilashree" and " Mithilaratna".

THE HIMALAYAN TIMES 2010 — The Himalayan Times

Top Stories: India ready to make history: Dhoni · 36 drug addicts held · Australian resic...

Prez inaugurates Int'l Maithili Conference

...ded At: 2010-12-22 7:42 PM Last Updated At: 2010-12-22 7:43 PM

NAVESH CHITRAKAR

President Dr. Ram Baran Yadav wears a Maithili cap during the International Maithili conference in Kathmandu on Wednesday December 22, 2010.

RSS

KATHMANDU: President Dr Ram Baran Yadav inaugurated the International Maithili Conference held at the Nepal Academy Hall on Wednesday.

On the occasion, President Dr Yadav said Mathili, that has been a popular language of use since the reign of King Janak of Mithila State, is not only a language of the Tarai people but the second largest language of the country.

Though Nepal is small it is rich in language and culture, Dr Yadav said and added that Maithili language has also served as a bridge to maintain cordial relations with neighbouring India.

Expressing gratitude to Bidhyapati, Jayabardhan for their ...ontribution in the development of Maithili language, the President also extended best wishes for the success of the ...onference.

...peaking on the occasion, Deputy Prime Minister and Minister for Physical Planning and Works, Bijaya Kumar Gachhadar ...aid Mathili language entered Kathmandu since the Malla regime and wished for the success of the conference.

...inister for Culture, Minendra Rijal said Mathili is a very old language that has been in use in the Tarai and Kathmandu ...nce 250 years ago.

...hancellor of Nepal Academy, Bairagi Kainla expressed happiness for being associated with the conference and ...escribed the Maithili language as an ancient and prosperous language in terms of literature and culture.

...r Baidhya Nath Tiwari of India said Mathili language remains as a symbol of friendship between Nepal and India.

International Maithili Conference kicks off

POST REPORT

KATHMANDU, DEC 22 -
International Maithili Conference kicked off in the Capital on Wednesday with an aim to promote Maithili language.

Inaugurating the two-day conference underway at Nepal Academy Hall, President Ram Baran Yadav said that Maithili has been a popular language since the reign of King Janak of Mithila State and it is not only a language of the Tarai people, but the second most spoken language of the country. "Nepal is small in size, but rich in language and culture," Yadav said. "Maithili has also served as a bridge to maintain cordial relations with neighbouring India."

In the programme, Deputy Prime Minister Bijaya Kumar Gachhadar, Culture Minister Minendra Rijal and Chancellor of Nepal Academy Bairagi Kainla shed lights on the importance of Maithili language. They even described Maithili as an ancient and rich language in terms of literature and culture. The conference will conclude on Thursday.

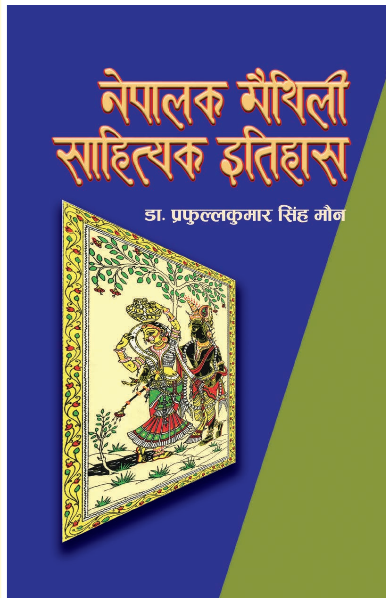
ljhofbzdL s ;'vb cj;/ k/ ;d:t ze]R5's
klt d+ndo ze'sfdgf JoQm s/}5L .



ddtf emf
cWoIf tyf dxfkaGws
;femf k|sfzg



a8Pbz}s ze cj;/ k/ g]kfns cu0fL k|sfzg ;+yf
;femf k|sfzg dl}ynL efiff ;flxTo]txf; s ;+
ckg];es ;f]emf+pkl:yt e]h cl5 -



g]kfns dl}ynL ;flxTos 0ltxf;
8f= kk|mNnsdf/ l;+x df}g



;femf k|sfzg
kNrf}s, nlntk'/

cf7d cGt/fi6Lo dl}ynL ;Dd]ng s clunf cfof]hg
df+sfdfVofs k0o gu/L
ufx}f6Ld]ckg];fb/ cfdlGq t 5L



>L sfdbj emf
cWoIf

8f= a}Bgfy rf}w/L 'a}h"
dxf;lrj

k}Fsf}Gt rf}w/L
:jfutfWoIf

/fde/f] sfkl8Pe]d/'
jl/i7 pkfWoIf

cGt/fi6Lo dl}ynL ;Dd]ng :jfut ;ldlt

lrqd]

/fi6klt 8f /fdj/0f ofbjs ;Fu sfo{;Dkfbg ;ldlts ;b:o nf]lg .

The members of the working committee with the President Dr. Rambaran Yadav.